

# GILLETTE & L'ORÉAL, WOMEN USA

VOL. IV

Missouri • Montana • Nebraska • Nevada  
New Hampshire • New Jersey  
New Mexico • New York



FERDINANDO FREGA ✨

# GILLETTE & L'ORÉAL, WOMEN USA — VOL. IV

L'ORÉAL THROUGH GILLETTE · 12

*मिसौरी, मोंटाना, नेब्रास्का, नेवाडा, न्यू हैम्पशर, न्यू जर्सी, न्यू मेक्सिको,  
न्यूयॉर्क राज्य। अमेरिकी यात्रा का चौथा पड़ाव, मैदानों से पूर्वी समुद्र तट  
तक।*

## अध्याय शून्य — साझा आरंभ

यह आरंभिक अध्याय *Women of the United States* के छहों भागों में साझा है। इसे यहाँ पूरा दिया गया है, और समेटकर रखा गया है ताकि श्रृंखला को बिना दोहराव के क्रम से पढ़ा जा सके।

## अध्याय शून्य

यहाँ दुनिया कोई इलाका नहीं है: यह एक सीमा है। उत्तरी ध्रुव स्वागत नहीं करता, माफ़ नहीं करता, गलती की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता। सफ़ेदी यहाँ एक निरपेक्ष सत्ता की तरह राज करती है, खामोश और बिना स्मृति के। तापमान कोई मौसम का आँकड़ा नहीं है: यह एक शिकारी है। रात महीनों तक चलती है, विचारों को कुचल देती है, लोगों की रूपरेखा बिगाड़ देती है, उनकी इच्छाशक्ति निगल जाती है।

समुदाय गिने-चुने हैं, छोटे हैं, और बंद हैं। इनुइट, युपिक, आर्कटिक के लोग वहाँ रहते हैं जहाँ कोई भी रहना नहीं चुनेगा। यहाँ हर व्यक्ति समूह के अस्तित्व के लिए ज़रूरी है। अगर तुम काम के नहीं हो, तो तुम बोझ बन जाते हो। और जो बोझ बन जाते हैं, वे खामोशी में, बर्फ़ में, एक ऐसे वातावरण के तर्क में गुम हो जाते हैं जो कोई रियायत नहीं देता।

वैज्ञानिक अड्डे एक और तरह की ठंडक जोड़ते हैं: पदानुक्रमों की ठंडक। यहाँ औरत एक दुर्लभ उपस्थिति है, एक विसंगति, जिसे या तो ढलना होगा या हार माननी होगी।

इस जगह “गुम हो जाने” की अवधारणा ही नहीं है। बस सफ़ेदी है, जो सब कुछ मिटा देती है।

## **इनडिट और युपिक महिलाएँ**

आर्कटिक की लड़की को लाड़-प्यार नहीं मिलता: उसे तैयार किया जाता है। वह जल्दी ही ठंड, अँधेरे और भूख को सहना सीख जाती है। उसे क़बीले के काम का बनना होता है, क्योंकि यहाँ पहचान निजी नहीं होती। वह कार्यात्मक होती है। औरत परिवार और समुदाय का बोझ उठाती है: भोजन, आग, बच्चे, खालें, देखभाल। अधिकारों की बात कोई नहीं करता। नाजुकी की बात कोई नहीं करता। अवसाद है, पर उसका कोई नाम नहीं। हिंसा है, पर उसका कोई गवाह नहीं।

## **वैज्ञानिक अड्डों की महिला**

पढ़ी-लिखी, सक्षम, अनुशासन की आदी। वह शोधकर्ता, तकनीशियन और डॉक्टर बनकर आती है। जल्दी ही उसे पता चल जाता है कि उत्तरी ध्रुव डिग्रियों को नहीं पहचानता। यहाँ सिर्फ़ मानसिक मज़बूती गिनी जाती है। पुरुषों के पदानुक्रम उस पर हावी रहते हैं, और कमज़ोरी के किसी भी संकेत को कमज़ोरी ही समझा जाता है। यह एक ऐसा वातावरण है जहाँ ताक़त काफ़ी नहीं होती: चरम आत्म-नियंत्रण चाहिए।

## **पश्चिमी “बाहरी” महिला**

आज़ादी में पली-बढ़ी, वह यह मानकर आती है कि ठंड को जीत लेगी। पर यह जगह उसे तोड़ देती है: अकेलापन, छोटी-छोटी जगहें, अंतहीन ख़ामोशियाँ। अड्डे समुदाय नहीं हैं, वे यंत्र हैं। और पुरुषों के बनाए यंत्र के भीतर एक औरत को गुम न हो जाने के लिए लड़ना पड़ता है।

## **दुनिया के छोर तक की यात्रा**

मेरा पड़ोसी अंतोनियो, जिसे सब नीनो कहते थे, बरसों से नॉर्थ केप की, आधी रात के सूरज की, बिना अँधेरे वाले महीनों की बातें करता था। यह एक सपना था जिसे वह जब में रखे फिरता था, किसी असंभव चीज़ की तरह। मई की एक सुबह मैंने उसकी घंटी बजाई और बस इतना कहा: “अपना सूटकेस तैयार करो।

मैं एक घंटे में लौटूँगा। हम 30 दिन में वापस आएँगे।” उसने मुझे हैरानी से, खुशी से देखा। उसकी पत्नी ने, चिंतित होकर, पूछा कि हमारी योजना क्या है। “एक सपने का पीछा,” मैंने जवाब दिया।

हम गाड़ी में बैठ गए। हमारी पत्नियाँ हमें ऐसे देख रही थीं जैसे हम पागल हों। पर यह यात्रा सच्ची थी। नीनो के पास पहले से ही सवालों की भरमार थी। “हम कहाँ जा रहे हैं? मुझे कितने पैसे साथ ले जाने चाहिए?” “आराम से,” मैंने उससे कहा। “हम 54 घंटे में वहाँ पहुँच जाएँगे। बस 5,000 किमी। हम नई रेंज रोवर में हैं। सफ़र का मज़ा लो।”

हर 300 किमी पर मुझे रुकना पड़ता था: वह मुझसे बारह साल बड़ा था, उसकी अपनी रफ़्तार थी। मेरे पास पानी और पेय थे; उसके पास कॉफ़ी और शरीर की ज़रूरतें। और हम जितना आगे बढ़ते गए, वह अपनी ज़िंदगी के बारे में उतना ही ज़्यादा बोलता गया। ऐसी बातें जो मैं कभी न जान पाता अगर वह अंतहीन सड़क न होती।

गाड़ी में अकेले दो आदमी, हमेशा औरतों की बातें करते हुए। वह सिर्फ़ अपनी पत्नी को जानता था। मैं हँसा। मैंने उसे तसल्ली दी: “हम सब ऐसे ही हैं।”

उसने मुझसे पूछा कि 60 घंटे गाड़ी चलाते हुए मैं होश में कैसे रह पाता हूँ। मैंने उसे रूस के बारे में बताया, जब 22 साल की उम्र में मैंने एक ऐसी औरत से मिलने के लिए 51 घंटे गाड़ी चलाई थी जिससे मैं कभी मिला नहीं था। “दूरियाँ सीमाएँ नहीं हैं,” मैंने उससे कहा, “वे बहाने हैं। मेरे पास कभी कोई बहाना नहीं रहा।”

## **सफ़ेदी में आगमन**

हम नॉर्वे में दाखिल हुए। सड़क किनारे एक हॉस्टल। हम गाड़ी वहीं छोड़कर स्लेज से आगे बढ़ने वाले थे।

गाइड पूरी तरह ढकी हुई थी, अभेद्य। जब उसने अपना चश्मा उतारा, तब मुझे पता चला कि वह एक औरत है। एक नॉर्वेजियन औरत, ख़ामोश, सीधी, बर्फ़ जैसी। नीनो स्लेज के बीच में, वह आगे, और मैं अपने 190 सेमी के साथ पीछे, सबसे आखिर में।

अब भी दिन का उजाला था। मेरी घड़ी समय दिखा रही थी, पर यह नहीं बता रही थी कि रात है या सुबह। यह आधी रात का सूरज था। हम नॉर्थ केप पहुँच गए थे।

नीनो रो पड़ा। उसने मुझे गले लगा लिया। मैंने हँसते हुए उससे कहा, "संभलकर... लोग सोचेंगे कि हम गे हैं।" हम हँसे, पर हम दुनिया के छोर पर थे।

फिर आया पाला:  $-52^{\circ}\text{C}$ ।

### **असली आर्कटिक में प्रवेश**

वे हमें कपड़े बदलने के लिए एक धातु के कंटेनर में ले गए। बेहद भारी, गद्देदार सूट, उलझी हुई ज़िपों से बंद होने वाले।

गाइड का पैसा मैंने दिया। नीनो को कुछ आदमियों के साथ एक इग्लू में छोड़ दिया गया; मुझे दूसरे में एक परिवार के साथ: एक बूढ़ा आदमी, 70 से 80 के बीच, और 30 से 50 के बीच की तीन औरतें।

वह एक बंद दुनिया थी। सरल। क्रूर।

आदमी एक तरफ़ रहता था। औरतें काम की रफ़्तार बनाए रखती थीं। और शौचालय इग्लू से पाँच मीटर दूर एक टीला था: टट्टी ज़मीन छूने से पहले ही जम जाती थी। मेरा पहला पेशाब एक पीला आर्कटिक तारा बन गया। यह उत्तर था जो मुझे सलाम कर रहा था।

बीच की उम्र वाली औरत, माजी, थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी बोलती थी। बाक़ी सब इशारे थे, आँखें, हाथ। ठंड की भाषा।

जब मुझे समझ नहीं आ रहा था कि सूट कैसे इस्तेमाल करूँ, तो उसने, बिना सोचे, एक छिपी हुई ज़िप दिखाने के लिए मेरी जाँघों के बीच छुआ। न कोई बुरी नीयत थी, न कोई शर्म: बस काम। ज़िंदा रहना।

### **इग्लू में तीन दिन**

वे खाना लाए। धुएँ में पकी मछली, कच्ची मछली, कॉड का कलेजा, व्हेल का पेट। और शार्क के गोले। कोई विकल्प नहीं था। कोई दूसरा रास्ता नहीं था। यह वही था जो प्रकृति देती है।

फिर मैंने पिया: एक लाल तरल। मुझे लगा शराब है। वह छाना हुआ, उबाला हुआ, मीठा किया हुआ व्हेल का खून था। मैंने उसे पी लिया। उसने मुझे ऐसी ताक़त दी जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी। एक आदिम ऊर्जा। मुझे लगा कोकीन है। नहीं। यह उत्तर था जो शरीर में उतर रहा था।

औरतें मुझे देखती रहीं। बूढ़ा शिकार पर निकल गया। मैं आराम करता रहा और खून पीता रहा। तीन दिन बिना फ़ोन, इंटरनेट, कंप्यूटर के, बिना नीनो के। बस मैं और वे।

रात नहीं थी। बस रोशनी, आग, बर्फ़ और साँस।

तीनों औरतें सोने के लिए लेट गईं। मैं जगह ढूँढ़ने लगा। सबसे छोटी ने अपनी बाँह उठाई और मुझे पास आने का इशारा किया। वे ठहाका मारकर हँस पड़ीं। मुझे समझ नहीं आया। उन्होंने कहा कि मैं उनका “क्रिसमस” हूँ।

यह कहने का एक तरीका कि मुझे अपना लिया गया था।

मैंने धन्यवाद कहने के लिए उन्हें कुछ पैसे देने की कोशिश की। उन्होंने मना कर दिया। उन्हें बस एक आलिंगन चाहिए था। और कैलाब्रियाई में कुछ शब्द, ताकि वे खुद को और करीब महसूस कर सकें।

वहाँ मैंने सच्चे उपहारों का मूल्य समझा: वे जिन्हें न खरीदा जा सकता है, न बेचा।

## **गाइड की विदाई**

तीन दिन बाद गाइड आई। उसने तीनों औरतों से एक घंटे तक बात की। मैं बाहर था। मुझे समझ नहीं आया कि वे क्या कह रही थीं। यह मेरा मामला नहीं था। यह उनकी भाषा थी, उनकी दुनिया, उनका क़ानून।

कंटेनर में, जब मैं कपड़े उतार रहा था, गाइड अंदर आई। जिज्ञासु। सीधी। उत्तरी। उसने मुझे कसकर गले लगाया। उसने मुझे चूमा। उसकी त्वचा दूध जैसी सफ़ेद थी। उसकी आँखें अगस्त के आसमान जैसी नीली थीं।

उसने मुझसे कहा कि मैं उसे अपने साथ ले चलूँ। उस दुनिया से निकलने के लिए वह कुछ भी कर गुज़रती।

मैं आदर से मुस्कुराया। मैं ऐसा नहीं कर सकता था। मुझे ऐसा करना भी नहीं चाहिए था।

मैंने उसके पास सिर्फ एक वादा छोड़ा: "अगर तुम्हें कुछ भी चाहिए, मुझे एक चिट्ठी लिखना। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" उसने पैसे भी लेने से मना कर दिया। वह एक सुंदर औरत थी, पर अकेली। ऐसा अकेलापन जो दूर से दिखाई नहीं देता। ऐसा अकेलापन जिसे ठंड माफ़ नहीं करती।

## **घर वापसी**

हम नीनो को लेने गए। वह रोमांचित था। वह वापस जाना नहीं चाहता था। पर मेरी उसकी पत्नी से मुलाकात तय थी।

उसने सबको अपने तीन दिनों के बारे में बताया। मैं चुप रहा। मैंने उस आदमी से कभी कुछ साझा नहीं किया। सिर्फ कागज़ से।

और इस तरह, जब नीनो अपनी दुनिया में लौट रहा था, मैं पहले ही दूसरी दुनिया की ओर निकल चुका था। एक और मंज़िल। एक और मुलाकात।

स्वागत है।

उपसंहार

## **उत्तर तुम्हें ले नहीं जाता: वह तुम्हें बदल देता है। और वह तुम्हें कभी**

पूरा वापस नहीं लौटाता। मर्द उत्तरी ध्रुव पर रोशनी, खामोशी, तस्वीरें, सपने ढूँढने आते हैं। औरतें ज़िंदा रहने के लिए रुकती हैं।

मर्द बताते हैं कि उन्होंने क्या देखा। औरतें उस पर चुप रहती हैं जो उन्होंने जिया।

मर्द लौट जाते हैं। औरतें रह जाती हैं। वे ठंड में रह जाती हैं, बर्फ़ के घरों में, अनसुनी खामोशियों में। वे उन समुदायों को सहारा देने के लिए रह जाती हैं जो उनका गुणगान नहीं करते। वे बच्चों, बूढ़ों, अजनबियों की रक्षा के लिए रह जाती हैं। वे अदृश्य रह जाती हैं।

मैं वहाँ से सिर्फ एक स्मृति लेकर आया: एक सुंदर, बेहद सुंदर औरत, पर अकेली। रोमानी अर्थ में नहीं। मानवीय अर्थ में। त्रासद अर्थ में।

## **चिंतन**

उत्तर शरीर को नहीं मारता। वह उपस्थिति को मारता है। और जो बचता है वह सफ़ेदी है: एक ऐसी जगह जहाँ औरतें एक ही समय में जीती भी हैं और गुम भी हो जाती हैं।

इसीलिए मैं लिखता हूँ। क्योंकि चरम जगहें अपनी कहानी खुद नहीं सुनातीं। और जो उनसे होकर गुज़रते हैं, वे चुप रहने की विलासिता नहीं उठा सकते।

मैं नहीं। मैं नहीं। मेरी धरती ने मुझे जन्म दिया, और बाक़ी दुनिया मेरा स्वागत किसी मेहमान की तरह नहीं, बल्कि परिवार के एक सदस्य की तरह करती है।

उत्तर की निरपेक्ष सफ़ेदी से मैं संयुक्त राज्य अमेरिका की निरपेक्ष उलझन में उतर आया।

## **संयुक्त राज्य अमेरिका**

### **असंभव काम**

अठारह साल एक अमेरिकी कंपनी के लिए काम करना तुम्हें वह देता है जो दुनिया की कोई और कंपनी नहीं दे सकती: एक कार्य-संस्कृति, प्रक्रियाएँ, एक स्पष्ट मिशन, और मूल्यों की एक व्यवस्था जो सिद्धांत नहीं है—वह रोज़ का अभ्यास है। वे उन्हें तुम्हें समझाते नहीं; वे उन्हें तुम्हारे भीतर गढ़ देते हैं। और वे यह तुम्हारी इजाज़त माँगे बिना करते हैं।

मैं न्यूयॉर्क के दफ़्तर में था जब मुझे एक ऐसा काम पेश किया गया जिसकी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी। पदोन्नति नहीं। तबादला नहीं। एक प्रयोग।

एक गोपनीय कार्यक्रम, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर मानवीय संबंधों के एक मॉडल को परखने के लिए बनाया गया था। उन्होंने मैनेजर, मनोवैज्ञानिक या प्रशिक्षक नहीं चुने थे। उन्होंने असली दुनिया के एक खास तरह के अनुभव वाले लोगों को चुना था। और मेरा नाम सामने आया—हालाँकि मैं अठारह साल से सेल्स में था। वे पद को नहीं देख रहे थे: वे दिमाग़ को देख रहे थे।

परीक्षा समझाने में सरल थी और पूरी करने में बेहद कठिन:

एक साल में अमेरिका के 50 राज्यों का दौरा करना, शहर खुद चुनते हुए और हर एक में कम से कम एक हफ़्ता रुकते हुए।

आखिरी दो हफ़्ते ज़बरदस्ती की छुट्टी होंगे। सारा खर्च वे उठाएँगे। मुझे बस जीना था, देखना था, समझना था, और हर सोमवार एक रिपोर्ट भेजनी थी। एक मानवीय, सूखा, सटीक ब्योरा।

मैंने अनुबंध पर दस्तखत कर दिए। मैंने घर पर ख़बर कर दी। उन्होंने कुछ नहीं पूछा। वे बस यह जानना चाहते थे कि महीने का राशन पहुँचा या नहीं। मैं अमेरिका में एक साल का सामना करने जा रहा था। वे, हमेशा की तरह, अगले महीने का सामना कर रहे थे।

एहतियात के तौर पर, मेरी तनख़्वाह सीधे इटली में मेरे बैंक खाते में जमा की जाती थी। यह मुझे से यह कहने का एक शिष्ट तरीक़ा था: “कोई बेवकूफी मत करना। जो तुम्हारे पास है उसी से जीना। देखते हैं तुम असल में कौन हो।”

सिर्फ़ पंद्रह साल बाद ही मुझे अपनी मूल रिपोर्टों, विश्लेषणों और उस सामग्री तक पहुँच मिली जो उन्होंने मेरे बारे में इकट्ठा की थी। यह किताब वहीं से जन्मी। मुझे इसे प्रकाशित करने की मंजूरी मिल गई, एक शर्त पर: उस कंपनी का नाम कभी न लेना जिसने इसे करवाया था।

इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। यह कहानी लोगो के बारे में नहीं है। यह एक ऐसे देश में एक आदमी के बारे में है जिसे खुद जिए बिना समझना असंभव है।

### **क्या मैं सबसे दूर के बिंदु से शुरू करूँ?**

तार्किक चुनाव था हाशिये से शुरू करना, केंद्र से नहीं। दो सरल कारणों से:

1. मैं प्रयोग से ताज़ा-ताज़ा निकला था: पूरी स्पष्टता, अधिकतम ध्यान।
2. छोर से शुरू करके मैं रास्ता सुधार सकता था और यात्रा को साफ़-सुथरे ढंग से ख़त्म कर सकता था।

मुझे बोस्टन या शिकागो से शुरू करने की ज़रूरत नहीं थी। मुझे एक सरहद से शुरू करना था। एक ऐसी जगह से जो सिर्फ़ कागज़ पर अमेरिका थी।

मैंने जूनो चुना, अलास्का की राजधानी। कटा हुआ। सिर्फ़ नाव या हवाई जहाज़ से पहुँचने लायक़। एक ऐसा शहर जो किसी का नहीं है। शुरुआत के लिए एकदम सही जगह।

## **संसाधनों का सही उपयोग**

निकलने से पहले मैंने वह किया जिसका एक अमेरिकी सबसे पहले सम्मान करता है: मैंने खुद को एक पेशेवर की तरह संगठित किया, किसी पर्यटक की तरह नहीं।

मैंने तीन सबसे लोकप्रिय एयरलाइनों को फ़ोन किया, जिनके घरेलू नेटवर्क सबसे बड़े थे। एक घंटे से भी कम में मैंने 60% छूट पर पचास घरेलू उड़ानों की एक टिकट-पुस्तिका ख़रीद ली।

कोई समय-सीमा नहीं। दिनों की कोई सीमा नहीं। कोई पाबंदी नहीं। बस एक शर्त: उन्हें एक साल के भीतर इस्तेमाल करना।

मैंने होटल चेनों, उबर टैक्सियों और कार किराये की कंपनियों के साथ भी यही किया, और फिर पड़ावों का, तरीक़ों का एक ठीक-ठाक कार्यक्रम बनाया, पर समय का नहीं।

मैं तैयार था।

यह मेरी पहली असली कामयाबी थी। पहला संकेत कि मुझे चलना-फिरना आता था। अमेरिका उन्हें इनाम देता है जो कुछ करते हैं, उन्हें नहीं जो इंतज़ार करते हैं।

जब कंपनी ने यह लेन-देन देखा, तो उसने वही किया जो एक अमेरिकी संस्कृति हमेशा करती है: उसने भरोसेमंदी जाँची।

क्या मैं लगातार आवाजाही का एक साल सँभाल सकता था? क्या मैं अप्रत्याशित घटनाओं, दूरियों और आपात स्थितियों से निपट सकता था? क्या मैं आत्मनिर्भर था?

इसीलिए, निकलने से पहले, मैंने एक और निर्णायक बात तय की:

मैंने यह सुनिश्चित किया कि मेरे क्रेडिट कार्ड पर हर महीने कम से कम \$100,000 की क्रेडिट सीमा हो।

यह खर्च करने के लिए नहीं था। यह दिखाने के लिए था कि हम उन्हें सँभाल सकते हैं। अमेरिकी ऐसे ही सोचते हैं: अगर तुम्हारे पास स्वायत्तता नहीं है, तो तुम्हारे पास आज़ादी नहीं है। और अगर तुम्हारे पास आज़ादी नहीं है, तो तुम्हारा मूल्यांकन नहीं हो सकता।

उस पल से कार्यक्रम अब एक काम नहीं रहा। वह एक मिशन बन गया।

## **और अब हम सचमुच यात्रा करते हैं**

अलास्का सिर्फ भूगोल के हिसाब से संयुक्त राज्य अमेरिका का हिस्सा है। यह एक और ही दुनिया है।

यह वह जगह है जहाँ औरतें बिना कोई निशान छोड़े गुम हो जाती हैं। जहाँ कोई शिकायत कभी अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँचती। जहाँ शहर एक जंगली महाद्वीप के बीच सभ्यता के टापू भर हैं।

जूनो मेरी पहली परीक्षा थी: एक राजधानी जिसे बाक़ी देश से कोई सड़क नहीं जोड़ती। अमेरिका का एक टुकड़ा जो अमेरिका जैसा नहीं लगता।

यहाँ मुझे कुछ समझ आने लगा: यह यात्रा भौगोलिक नहीं होगी। यह मानवीय होगी।

### **खंड 1 (भाग I)**

अलाबामा – अलास्का – एरिज़ोना – अर्कांसस – कैलिफ़ोर्निया – कोलोराडो – कनेक्टिकट – डेलावेयर – फ़्लोरिडा – जॉर्जिया

### **खंड 2 (भाग II)**

हवाई – आइडाहो – इलिनॉय – इंडियाना – आयोवा – कैनसस – केंटकी – लुइज़ियाना – मेन – मैरीलैंड

### **खंड 3 (भाग III)**

मैसाचुसेट्स – मिशिगन – मिनेसोटा – मिसिसिपी – मिसौरी – मोंटाना – नेब्रास्का  
– नेवाडा – न्यू हैम्पशायर – न्यू जर्सी – न्यू मेक्सिको

### **खंड 4 (भाग IV)**

न्यूयॉर्क – वॉशिंगटन

### **खंड 5 (भाग V)**

नॉर्थ कैरोलाइना – नॉर्थ डकोटा – ओहायो – ओक्लाहोमा – ओरेगन –  
पेंसिल्वेनिया – रोड आइलैंड – साउथ कैरोलाइना

### **खंड 6 (भाग VI)**

साउथ डकोटा – टेनेसी – टेक्सस – यूटा – वर्माँन्ट – वर्जीनिया – वेस्ट वर्जीनिया  
– विस्कॉन्सिन – वायोमिंग

## **मिसौरी**

मिसौरी विरोधाभासों से भरा राज्य है। एक तरफ़ शांत मिडवेस्ट; दूसरी तरफ़ एक दक्षिण, जिसने कभी कठोर होना नहीं छोड़ा। यह अमेरिका के सबसे बँटे हुए इलाकों में से एक है: कठिन मोहल्लों वाले सेंट लुइस और कैनसस सिटी, एक समानांतर दुनिया में बसे गोरे उपनगर, गरीब और धीमे देहात, और एक राजनीतिक व्यवस्था जो बोलती बहुत है पर सुलझाती कम है।

यह उस सामान्यता का राज्य है जो बेचैनी छिपाती है, उस सतही मुस्कान का जो गंभीर समस्याओं को ढक देती है, और उस “सब ठीक है” का, जो तब भी कहा जाता है जब कुछ भी ठीक नहीं होता।

यहाँ औरतें किसी विस्फोट में गायब नहीं होतीं। वे लगातार दबाव के नीचे गायब होती हैं: परिवार, काम, परंपरा, गरीबी, भीतर दबी हिंसा, एक नाजुक स्वास्थ्य व्यवस्था।

मिसौरी औरतों को आदत से मिटाता है। सब उससे सहने की उम्मीद करते हैं। और वह सहती रहती है, जब तक वह खुद से ही गायब नहीं हो जाती।

## **सेंट लुइस की महिला – 35 वर्ष**

सेंट लुइस एक ऐसा शहर है जो दो दुनियाओं में मौजूद है: एक इतिहास से समृद्ध, दूसरी हिंसा, उपेक्षा और नस्लीय असमानता में फँसी।

यहाँ की औरत एक साथ तीन समस्याओं का सामना करती है: – खतरनाक मोहल्ले – कमज़ोर स्कूल – कम मज़दूरी।

वह शहर के ज़रूरी तंत्रों में काम करती है: – क्लिनिक – सुपरमार्केट – सहायता सेवाएँ – खान-पान – बुनियादी शिक्षा।

वह वह सब थामे रहती है जो व्यवस्था नहीं थाम पाती। और जब वह सब कुछ थामे रहती है, उसे कोई नहीं थामता।

उसकी अनुपस्थिति शहरी है: शहर के पुनर्निर्माण में उसकी कोई आवाज़ नहीं, जबकि हर रोज़ का हर संकट वही सँभालती है।

## **“परफ़ेक्ट” उपनगरों की महिला – 40 वर्ष**

बड़े शहरों के बाहर ऐसे उपनगर हैं जो बेदाग़ लगते हैं: साफ़ सड़कें, अच्छे स्कूल, सजे-सँवरे घर।

यहाँ की औरत गरीब नहीं है, पर आज़ाद भी नहीं है।

उसे बनाए रखना होता है: – परिवार की ऊँची छवि – बेदाग़ बच्चे – लगातार सामाजिक मौजूदगी – भरा हुआ कार्यक्रम – “बेदाग़” शादी – एक ऐसा जीवन-स्तर जो कभी गिर नहीं सकता। दबाव चुप है और लगातार है। वह ढह नहीं सकती। वह धीमी नहीं हो सकती। वह नाजुकता नहीं दिखा सकती।

उसकी अनुपस्थिति मानसिक है: वह सिर्फ़ एक भूमिका के रूप में मौजूद है, एक इंसान के रूप में नहीं।

## **ग्रामीण महिला – 49 वर्ष**

मिसौरी का देहात धीमा, रूढ़िवादी और बंद है। घर एक-दूसरे से दूर हैं, सेवाएँ न्यूनतम हैं, और परंपराएँ भारी हैं।

यहाँ की औरतें एक ऐसी दुनिया में जीती हैं जो बहुत ही कम बदलती है: – अस्थिर नौकरियाँ – स्वास्थ्य सेवा तक कमज़ोर पहुँच – बड़े परिवार – फैली हुई लतें – सामाजिक जीवन को नियंत्रित करने वाले चर्च – अपनी भूमिका से बाहर निकलने की बहुत कम गुंजाइश।

यह बिना विकल्पों वाली ज़िम्मेदारियों का जीवन है। अगर तुम्हें कोई समस्या है, तो तुम उसे खुद सँभालती हो। अगर तुम ढह जाती हो, तो किसी को पता नहीं चलता।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक और सांस्कृतिक है: वह दूरी और परंपरा में गायब हो जाती है।

### **उद्योग और शारीरिक श्रम की महिला – 37 वर्ष**

मिसौरी में मध्यम आकार के उद्योगों की भारी मौजूदगी है: गोदाम, समन्वय, असेंबली लाइनें, कारखाने।

यहाँ औरतें भारी शारीरिक काम करती हैं: – पैकेजिंग – उत्पादन लाइनें – रात की पालियाँ – माल ढुलाई – गुणवत्ता जाँच – समन्वय में सहायता।

घिसे हुए शरीर, कम कमाई, असंभव घंटे। यह ऐसा काम है जिसकी राज्य को ज़रूरत है, पर जो पूरी तरह अदृश्य है। उसकी अनुपस्थिति शारीरिक है: वह टूट जाती है और कोई बीच में आने वाला नहीं होता।

### **उपसंहार – मिसौरी**

मिसौरी एक ऐसा राज्य है जो दिखावटी सामान्यता पर फलता-फूलता है। और सामान्यता में औरतें खुद को खो देती हैं।

वह कठिन मोहल्लों, हृद से ज़्यादा सामाजिक उपनगरों, कठोर कारखानों, धीमे देहात को सँभालती है।

हर दिन एक चुपचाप लड़ाई है। और चुपचाप लड़ाइयाँ सबसे ज़्यादा तबाह करती हैं।

मिसौरी औरतों को एक ही वार में नहीं मिटाता। वह उन्हें उन आदतों से मिटाता है, जिन पर कभी कोई सवाल नहीं उठाता।

## **चिंतन – मिसौरी**

इस भाग का हर राज्य अनुपस्थिति का एक प्रकार दिखाता है। मिसौरी “चुप” अनुपस्थिति दिखाता है: वह जो दिनचर्या से, सामाजिक अपेक्षाओं से, सबके लिए सब कुछ होने के बोझ से पैदा होती है।

यहाँ औरतें वह अदृश्य गोंद हैं जो हर सामाजिक वर्ग को जोड़े रखती है। वे हर जगह हैं। और ठीक इसीलिए उन्हें कोई नहीं देखता।

मिसौरी सिखाता है कि मिटाने के लिए नफ़रत या टकराव की ज़रूरत नहीं होती। बस एक पूरे समाज का यह मान लेना काफ़ी है कि औरतें हमेशा वहाँ रहेंगी।

और इसीलिए यह अध्याय बुनियादी है: यह याद दिलाने के लिए कि सामान्यता को अगर सहारा न मिले, तो वह जाल बन जाती है।

## **मोंटाना**

मोंटाना शुद्ध विशालता है: विशाल पहाड़, अंतहीन सड़कें, अंतहीन जंगल, अलग-थलग घर, खाल चीर देने वाली सर्दियाँ। यह अमेरिका के सबसे सुंदर राज्यों में से एक है। और रहने के लिए सबसे कठिन राज्यों में से भी एक।

यहाँ औरतें किसी टकराव की वजह से गायब नहीं होतीं। वे भूगोल, अलगाव, ग्रामीण मानसिकता और भावनात्मक अकेलेपन की वजह से गायब होती हैं। यह एक ऐसा राज्य है जहाँ शोर से ज़्यादा चुप्पी भारी पड़ती है।

मोंटाना सहनशक्ति माँगता है। और सबके लिए सहना औरतों को ही पड़ता है।

## **दूर-दराज़ इलाकों की महिला – 51 वर्ष**

यहाँ तुम सबसे नज़दीकी दुकान से 30 किमी दूर रह सकते हो। सबसे नज़दीकी क्लिनिक से एक घंटा दूर। किसी असली अस्पताल से दो घंटे दूर।

इन इलाकों में रहने वाली औरतें झेलती हैं: – भयानक ठंड – कोई तुरंत मदद नहीं – अनदेखी की गई स्वास्थ्य समस्याएँ – सँभालने को पुराने घर – परिवार की पूरी ज़िम्मेदारी – कहीं फँस जाने का ठोस डर।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है: वह गायब हो जाती है क्योंकि वह वहाँ रहती है जहाँ कुछ नहीं पहुँचता।

### **रैंच परिवारों की महिला – 39 वर्ष**

मोंटाना पशुपालन पर फलता-फूलता है। मवेशी, घोड़े, बड़े जानवर और शारीरिक मेहनत।

यहाँ की औरत सब कुछ करती है: – जानवरों में हाथ बँटाती है – सबके लिए खाना पकाती है – हिसाब-किताब सँभालती है – गाड़ियाँ चलाती है – आपात स्थितियों से निपटती है – बीच वीराने में बच्चे पालती है।

वह मर्द की तरह काम करती है, पर उसे “परिवार की एक मौजूदगी” माना जाता है। उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: वह मूल्य पैदा करती है, पर किसी चीज़ में दिखाई नहीं देती।

### **छोटे कस्बों की महिला – 44 वर्ष**

मोंटाना के छोटे कस्बों में समय ठहरा हुआ है। समुदाय छोटे हैं, सब सबको जानते हैं, और कोई नहीं बदलता।

औरत को होना चाहिए: – माँ – भरोसेमंद – “कांड न करने वाली” – समर्पित – हमेशा उपलब्ध।

वह खुद को नए सिरे से नहीं गढ़ सकती। वह अपनी सांस्कृतिक सीमाओं से पार नहीं जा सकती। वह नाजुकता ज़ाहिर नहीं कर सकती।

उसकी अनुपस्थिति सामाजिक है: वह खुद की नहीं, समुदाय की है।

### **प्रकृति पर्यटन में काम करने वाली महिला – 33 वर्ष**

मोंटाना अपने पार्को, झीलों और पास के येलोस्टोन की वजह से पर्यटकों को खींचता है। पोस्टकार्डों के पीछे वे औरतें हैं जो होटल, रेस्तराँ, बाहरी गतिविधियाँ, रखरखाव, समन्वय और सफ़ाई चलाती हैं।

कठिन पालियाँ, मौसमी मज़दूरी, दूर-दराज़ इलाकों में ज़िंदगी। कोई स्थिरता नहीं।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: यह क्षेत्र उसी के सहारे जीता है, पर वह कभी चैन से नहीं जी पाती।

### **उपसंहार – मोंटाना**

मोंटाना मनमोहक प्रकृति और क्रूर अकेलेपन का मेल है। यहाँ औरतें दूरी में गायब हो जाती हैं: शारीरिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक दूरी में। वही अलग-थलग घरों, रैंचों, परिवारों, छोटे कस्बों और पर्यटन को जोड़े रखती हैं। और जब वे सब कुछ जोड़े रखती हैं, कोई देखता नहीं।

### **चिंतन – मोंटाना**

इस भाग का हर राज्य अनुपस्थिति का एक रूप दिखाता है। मोंटाना वह रूप दिखाता है जो सब कुछ निगल जाने वाले भूगोल से पैदा होता है।

यहाँ औरतें हिंसा या भयानक गरीबी से नहीं मिटतीं। वे मीलों के खालीपन से, अकेला कर देने वाली सर्दियों से, कभी न बदलने वाली संस्कृति से, उस भूमिका से मिटती हैं जिसे वे ठुकरा नहीं सकतीं।

यह एक धीमा, चुप मिटना है। पहचानने में सबसे कठिन मिटनों में से एक, ठीक इसलिए कि यह कोई शोर नहीं करता।

### **नेब्रास्का**

नेब्रास्का खुली, सीधी, सपाट धरती है। विशाल खेत, लगातार हवा, अंतहीन आसमान। बाहर से: शांति। भीतर से: अलगाव, सुस्ती, रूढ़िवादी समुदाय, खेतों का कठोर काम, और बहुत कम अवसर।

यह एक ऐसा राज्य है जो मिडवेस्ट और वेस्ट के बीच आधे रास्ते पर जीता है, पर दोनों में से किसी की ताकत के बिना।

यहाँ औरतें अराजकता की वजह से गायब नहीं होतीं। वे बोझिल सामान्यता की वजह से, खेती की दिनचर्या की वजह से, कभी न बदलने वाली भूमिकाओं की वजह से, भौगोलिक अकेलेपन की वजह से गायब होती हैं।

नेब्रास्का शोर नहीं करता, पर खा जाता है।

## **खेत की महिला – 40 वर्ष**

नेब्रास्का की औरत खेत का अभिन्न हिस्सा है: – भोर में जागना – सँभालने को जानवर – सबके लिए खाना – परिवार का हिसाब-किताब – देखने को फ़सलें – घर का रखरखाव – पालने को बच्चे – अचानक आने वाली आपात स्थितियाँ।

वह मर्दों जितना काम करती है, अक्सर उससे ज़्यादा। पर उसे “बेरोज़गार” के रूप में दर्ज किया जाता है।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: वह मूल्य पैदा करती है, पर आँकड़ों में उसका अस्तित्व नहीं है।

## **छोटे कस्बों की महिला – 46 वर्ष**

कुछ हज़ार लोगों के गाँव, जहाँ हर कोई हर किसी के बारे में सब कुछ जानता है।

औरत को होना चाहिए: – साथ रहने वाली माँ – स्थिर पत्नी – सम्मानजनक व्यक्ति – चर्च में सक्रिय – समुदाय का सहारा।

वह शॉर्टकट, संकट या अचानक बदलाव का जोखिम नहीं उठा सकती। वह दूसरों की तय की हुई एक स्थिर भूमिका के भीतर जीती है।

उसकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक है: उसकी एक जगह है, पर आवाज़ नहीं।

## **हल्की सेवाओं में काम करने वाली महिला – 32 वर्ष**

नेब्रास्का के शहरों में — लिंगन, ओमाहा, ग्रैंड आइलैंड — रोज़ का काम औरतें करती हैं:

– कैशियर – सफ़ाई – खान-पान – स्कूल में सहायता – वृद्धाश्रम – सचिव का काम

कम मज़दूरी, टुकड़ों में बँटी पालियाँ, कोई भविष्य नहीं। उसकी अनुपस्थिति सामाजिक है: उसके बिना शहर नहीं चलता, पर जब “विकास” की बात होती है तो कोई उसका ज़िक्र नहीं करता।

## **दूरियों की महिला - 53 वर्ष**

नेब्रास्का एक ऐसा राज्य है जहाँ तुम दो घंटे गाड़ी चला सकते हो और कोई असली कस्बा न दिखे। यह दूरी जीने का एक ढंग बन जाती है।

शहरों के बाहर रहने वाली औरत झेलती है: - हर ज़रूरत के लिए लंबे सफ़र - बहुत कम चिकित्सा देखभाल - कठोर सर्दियाँ - अलग-थलग घर - नीरस दिनचर्या - कोई असली सामाजिक जाल नहीं।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है: वह किलोमीटरों में गायब हो जाती है।

## **उपसंहार - नेब्रास्का**

नेब्रास्का एक ऐसी धरती है जो सरल लगती है, पर सरलता सिर्फ़ सतह पर है।

यहाँ औरतें गायब हो जाती हैं: - बिना वेतन के खेती के काम में - बंद समुदायों में - भारी दूरियों में - सेवाओं की कमी में - कठोर भूमिकाओं में।

यह धरती, परंपरा और चुप्पी से बनी अनुपस्थिति है।

## **चिंतन - नेब्रास्का**

हर राज्य अनुपस्थिति का एक रूप दिखाता है। नेब्रास्का वह रूप दिखाता है जो कभी न बदलने वाली रोज़मर्रा की ज़िंदगी से बनता है।

कोई प्रत्यक्ष हिंसा नहीं, कोई नाटकीय संकट नहीं। बस एक ज़िंदगी है जो खुद को दोहराती है, एक मेहनत है जिसे पहचाना नहीं जाता, एक भूमिका है जिसे छोड़ा नहीं जा सकता। नेब्रास्का वह राज्य है जहाँ औरतें सब कुछ जोड़े रखती हैं और ठीक इसी वजह से वे दिखाई नहीं देतीं।

और इसीलिए यह इस अध्याय का हक़दार है: क्योंकि सबसे आम मिटाया जाना वही है जो सामान्य लगता है।

## **नेवादा**

नेवादा दिखावे पर बना राज्य है। रोशनी, कसीनो, होटल, मनोरंजन, पर्यटन, जुआ, कभी न ख़त्म होने वाली रातें। एक शो-केस, जिसे दुनिया आज़ादी, अति

और संभावना के रूप में देखती है।

सच इसका उल्टा है।

नेवादा उन जगहों में से है जहाँ स्त्री के शरीर को सबसे आसानी से इस्तेमाल किया जाता है, निचोड़ा जाता है, खपाया जाता है और बदल दिया जाता है। एक ऐसी जगह जहाँ महिलाएँ अवसर की कमी से नहीं मिटतीं, बल्कि इसलिए मिटती हैं कि उनकी मौजूदगी को माल की तरह बरता जाता है।

यहाँ स्त्री की अनुपस्थिति आधुनिक है, सचेत है, सोची-समझी है। एक सुरुचिपूर्ण, लगातार और साफ़-सुथरा मिटाया जाना। असंभव घंटों, रात की पालियों, सुंदर दिखने के दबाव, घिसी हुई पहचान और पर्यटन उद्योग द्वारा थोपी गई भूमिकाओं से बना हुआ।

### **कसीनो और होटलों की महिला – 33 वर्ष**

लास वेगास सिर्फ़ इसलिए फलता-फूलता है क्योंकि हज़ारों महिलाएँ चलाती हैं: – रिसेप्शन – हाउसकीपिंग – रेस्तराँ – बार – मनोरंजन – ग्राहक सेवा – समन्वय – पर्यटकों के कॉल सेंटर।

रात की पालियाँ, रद्द हुए सप्ताहांत, न होने वाली छुट्टियाँ, लगातार दबाव। महिलाओं को अपनी छवि बेदाग रखनी होती है, तब भी जब भीतर कोई ताक़त बाक़ी न हो। उसकी अनुपस्थिति शारीरिक भी है और मानसिक भी: वह एक ऐसी व्यवस्था में काम करती है जो उसे इंसान नहीं, “अनुभव का हिस्सा” मानकर इस्तेमाल करती है।

### **रात के कारोबार में काम करने वाली महिला – 29 वर्ष**

रात का नेवादा चमकीला नहीं है। वह कठोर है। रोशनियों, संगीत और तमाशों के बीच ज़िंदगियाँ खपती हैं:

– होस्टेस – डांसर – बारटेंडर – प्रमोटर – छवि और सुंदर मौजूदगी से जुड़ी भूमिकाएँ

तुम्हारा शरीर अनुबंध का हिस्सा है। अगर तुम उसे सँभाल न सको, तो वे एक मिनट में तुम्हें बदल देंगे।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक और नैतिक है: काम को उसकी छवि चाहिए, उसका व्यक्तित्व नहीं।

### **पर्दे के पीछे सब चलाने वाली प्रवासी महिला – 41 वर्ष**

विशाल होटलों के पीछे सैकड़ों प्रवासी महिलाएँ हैं: फ़िलिपीनी, मैक्सिकन, हैतियन, मध्य अमेरिकी।

वही हैं जो वह सारा काम करती हैं जिसे पर्यटकों को नहीं देखना चाहिए:

– औद्योगिक लॉन्ड्रियाँ – लगातार सफ़ाई – तहख़ानों की रसोइयाँ – विशाल गोदाम – शाम का समन्वय – फ़र्श की तैयारी

छिपी हुई ज़िंदगियाँ। थके हुए शरीर। अमानवीय पालियाँ। उसकी अनुपस्थिति व्यवस्थागत है: वह अनिवार्य है, पर उसे अदृश्य माना जाता है।

### **लास वेगास के बाहर रहने वाली महिला – 52 वर्ष**

नेवादा सिर्फ़ रोशनियाँ नहीं है। वह आसपास का रेगिस्तान भी है: छोटे कस्बे, नीचे-नीचे मकान, गिनी-चुनी सेवाएँ, अलग-थलग उद्योग।

यहाँ की महिलाएँ झेलती हैं: – असहनीय खर्च – सीमित स्वास्थ्य सेवा – परिवहन का अभाव – भारी दूरियाँ – कठोर, आपस में कम जुड़े समुदाय – सीमित अवसर।

वह उस ज़िंदगी के उलट ज़िंदगी जीती है जिसे दुनिया इस राज्य से जोड़ती है।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है: वह रोशनियों वाले नेवादा में नहीं, असली नेवादा में रहती है।

उसके बारे में कोई बात नहीं करता।

### **उपसंहार – नेवादा**

नेवादा प्रदर्शन पर बना राज्य है। यहाँ सब कुछ छवि, अनुभव और मनोरंजन है।

महिलाएँ वह ख़ामोश इंजन हैं जो इस मशीन को घुमाता है: होटल, कसीनो, रेस्तराँ, मनोरंजन, रखरखाव, समन्वय।

फिर भी उन्हीं की क़द्र सबसे कम है। वही दूसरों के सपनों को थामे रखती हैं, जबकि खुद एक कठोर, खपा देने वाली और अदृश्य हक़ीक़त जीती हैं।

नेवादा उन्हें ठीक वैसे ही मिटाता है जैसे उन्हें इस्तेमाल करता है।

### **चिंतन – नेवादा**

हर राज्य अनुपस्थिति का कोई न कोई चेहरा दिखाता है। नेवादा सबसे आधुनिक चेहरा दिखाता है: महिलाएँ, जिन्हें आर्थिक कामों तक सीमित कर दिया गया है।

उसे गरीबी नहीं मिटाती। व्यवस्था मिटाती है।

यह गढ़ी हुई अनुपस्थिति है: खामोश, सुरुचिपूर्ण, अवसर का भेस धरे हुए। महिलाओं के पास हज़ार संभावनाएँ हैं, पर उन्हें खपाने के भी हज़ार तरीक़े हैं।

और इसीलिए यह अध्याय ज़रूरी है: क्योंकि रोशनियों के बीच यह कम दिखता है कि उन्हें हर दिन जलाता कौन है।

### **न्यू हैम्पशायर**

न्यू हैम्पशायर के पास आज़ादी है, जंगल हैं, झीलें हैं, पहाड़ियाँ हैं, बेदाग़ गाँव हैं, शांत सड़कें हैं और लगभग शून्य टैक्स है। बाहर से यह एक सादा-सा स्वर्ग लगता है: न अफ़रा-तफ़री, न शोर, न विशाल शहर। सिर्फ़ व्यवस्था और प्रकृति।

**समस्या यह है कि पूरी आज़ादी का मतलब अक्सर पूरा अकेलापन होता है।**

और जब राज्य सार्वजनिक सेवाओं में कम निवेश करता है, तो बोझ सीधे लोगों पर पड़ता है—सबसे पहले महिलाओं पर।

यहाँ महिलाओं की अनुपस्थिति कोई त्रासदी नहीं है। वह अलगाव है, कठोर सांस्कृतिक रीतियाँ हैं, परिवार का दबाव है और सच्चे सामाजिक सहारे का अभाव है।

न्यू हैम्पशायर हमला नहीं करता। वह तुम्हें अकेला छोड़ देता है।

## **छोटे समुदाय की महिला – 47 वर्ष**

न्यू हैम्पशायर के गाँवों में सब कुछ शांत लगता है। सब कुछ बंद है।

महिला को होना ही चाहिए: – भरोसेमंद माँ – सम्मानित सामाजिक चेहरा – स्कूलों में स्वयंसेविका – समुदाय में मौजूद – स्थानीय नियमों के हिसाब से एक “अच्छी इंसान”।

वह गलती नहीं कर सकती। वह नियम से बहुत बाहर नहीं जा सकती। वह भावनात्मक संकट का बोझ नहीं उठा सकती।

उसकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक है: उसके पास भूमिका है, आज़ादी नहीं।

## **ठंड और दूरी में रहने वाली महिला – 52 वर्ष**

न्यू हैम्पशायर बड़ा नहीं है, पर अलग-थलग इलाकों, दूर-दूर बसे मकानों और सर्दियों में रुकावट बन जाने वाली सड़कों से भरा है।

यहाँ की महिला जीती है: – महीनों की बर्फ़ के साथ – हर काम को उलझा देने वाली दूरियों के साथ – देर से इलाज पाने वाली बीमारियों के साथ – मानसिक अलगाव के साथ – कोई जगह न छोड़ने वाली घरेलू दिनचर्या के साथ – कम स्थानीय स्वास्थ्य सेवा के साथ।

अगर वह गिर जाए, तो इंतज़ार करती है। अगर बीमार हो, तो मीलों गाड़ी चलाती है। अगर भावनात्मक रूप से टूट जाए, तो किसी को पता नहीं चलता।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है: वह खामोशी और ठंड में गायब हो जाती है।

## **ज़रूरी काम – 38 वर्ष**

मध्यम आकार के शहरों में—कॉनकॉर्ड, मैनचेस्टर, नाशुआ—बुनियादी सेवाएँ महिलाएँ चलाती हैं:

– स्कूल – क्लीनिक – बुजुर्गों की देखभाल – सरकारी दफ़्तर – प्राथमिक शिक्षा – प्रशासनिक सेवाएँ

कम वेतन, वेतन से कहीं बड़ी ज़िम्मेदारियाँ, लगातार भावनात्मक बोझ।

उसकी अनुपस्थिति परिचालन की है: वह कल्याण-व्यवस्था में जो कुछ बचा है उसे जोड़े रखती है, पर राज्य उसके क्षेत्रों में बहुत कम निवेश करता है।

वह अनिवार्य है, पर थकी हुई।

### **पर्यटन इलाकों में कम वेतन पर काम करने वाली महिला – 33 वर्ष**

राज्य का उत्तरी हिस्सा पर्यटन पर जीता है: पतझड़ के पत्ते, झीलें, पहाड़, सर्दी।

बेदाग़ तस्वीरों के पीछे वे महिलाएँ हैं जो: – इमारतें साफ़ करती हैं – नाश्ता तैयार करती हैं – रेस्तराँ में काम करती हैं – बी&बी चलाती हैं – कमरे ठीक करती हैं – छोटा-मोटा रखरखाव करती हैं।

भीड़ वाले मौसम और ख़ाली मौसम। एक अस्थिर अर्थव्यवस्था। शून्य असली सुरक्षा।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: सब कुछ उसी के सहारे चलता है, पर व्यवस्था उसे बदली जा सकने वाली मानती है।

### **उपसंहार – न्यू हैम्पशायर**

न्यू हैम्पशायर व्यवस्थित और शांत है। और ठीक इसी वजह से महिला बिना किसी आवाज़ के गायब हो जाती है।

वह गायब होती है इनके बीच: – पारंपरिक भूमिकाएँ – बंद समुदाय – शारीरिक दूरी – कभी न ख़त्म होने वाली सर्दी – अपर्याप्त सेवाएँ – कम वेतन वाले ज़रूरी काम।

कोई हंगामा नहीं। कोई अफ़रा-तफ़री नहीं। बस एक अकेलापन जो सामान्य बन जाता है।

### **चिंतन – न्यू हैम्पशायर**

हर राज्य अनुपस्थिति का कोई अलग रूप दिखाता है। न्यू हैम्पशायर "आदर्श" रूप दिखाता है: एक शालीन, साफ़-सुथरा और व्यवस्थित मिटाया जाना।

यहाँ महिला समुदायों को चलाती है, पर उसे सँभालने वाला कोई समुदाय नहीं है।

यह न्यू इंग्लैंड का विरोधाभास है: तुम जितने सभ्य हो, उतना ही ज़्यादा यह उम्मीद करते हो कि महिला सब कुछ अपने आप सुलझा ले।

और इसीलिए यह अध्याय ज़रूरी है: यह याद दिलाने के लिए कि ऊपर से "अच्छे" दिखने वाले राज्यों में भी जीना भयानक हो सकता है।

## न्यू जर्सी

न्यू जर्सी सीमांत इलाका है: जुड़ा हुआ, बेचैन, महंगा, रोज़ आने-जाने वालों से लदा हुआ, मिश्रित परिवारों, प्रवासियों, कठिन मोहल्लों, महंगे उपनगरों और भुला दिए गए शहरों से भरा हुआ। यह "पुल के उस पार" वाला न्यूयॉर्क नहीं है। यह एक जटिल, बिखरा हुआ राज्य है, जहाँ महिलाएँ एक ऐसी व्यवस्था चलाती हैं जो जितना लौटाती है उससे ज़्यादा खपा लेती है।

यहाँ महिलाओं की अनुपस्थिति पाँच बेहद कठोर तत्वों से पैदा होती है: – बेहद असहनीय जीवन-खर्च – अदृश्य घरेलू काम – थका देने वाला रोज़ का आना-जाना – असली तनावों वाले बहुजातीय समुदाय – टिके रहने वाली पारंपरिक पारिवारिक भूमिकाएँ।

न्यू जर्सी महिलाओं को हिंसा से नहीं मिटाता। वह उन्हें हज़ार कामों के बीच बस अस्तित्व बनाए रखने की मेहनत से मिटाता है।

### रोज़ आने-जाने वाली महिला – 36 वर्ष

न्यू जर्सी रोज़ आने-जाने वालों का राज्य है। हर दिन न्यूयॉर्क या फ़िलाडेल्फ़िया पहुँचने में घंटे बर्बाद होते हैं: देर से चलती ट्रेनें, बेक्राबू ट्रेफ़िक, परिवहन का भारी खर्च और बहुत देर से घर वापसी।

जो महिला यह ज़िंदगी जीती है, वह "आधी-आधी" जीती है: – आधी काम पर – आधी सार्वजनिक परिवहन में – आधी घर पर (जो विडंबना से परिवार के बोझ का आधे से ज़्यादा हिस्सा ले लेता है)

उसकी अनुपस्थिति समय की है: उसके पास अपने लिए वक़्त नहीं है। उसके पास किसी चीज़ के लिए वक़्त नहीं है।

वह टुकड़ों में मौजूद है।

## **सेवाओं में काम करने वाली प्रवासी महिला - 42 वर्ष**

(लैटिना, हैतियन, अफ्रीकी, फ़िलिपीनी)

न्यू जर्सी प्रवासियों की ताकत पर फलता-फूलता है। यहाँ की महिला पूरे राज्य का मंच थामे रखती है: - अमीरों के घरों में सफ़ाई - बिना नियम की बेबीसिटिंग - रेस्तराँ की रसोइयाँ - नर्सिंग होम - रखरखाव - कम वेतन वाली बुनियादी सेवाएँ

वह एक साथ तीन समस्याएँ झेलती है: - कम वेतन - बेहद ऊँचे किराए - भारी पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक और भाषाई है: वह काम करती है, बोलती है, ढल जाती है, पर व्यवस्था के हाशिये पर ही रहती है।

वह अपरिहार्य है, फिर भी हमेशा बदली जा सकने वाली।

## **कठिन मोहल्लों की महिला - 34 वर्ष**

न्यू जर्सी सिर्फ़ अमीरों का घमंड नहीं है। यहाँ पूर्व के कुछ सबसे परेशान शहर हैं:

- शहरी हिंसा - कम पैसे वाले स्कूल - बेरोज़गारी - कमज़ोर स्वास्थ्य सेवा - सच्ची सामुदायिक सेवाओं का अभाव

यहाँ रहने वाली महिला झेलती है: - लगातार असुरक्षा - अनिश्चित नौकरियाँ - बेकार परिवहन - वेतन के अनुपात से बाहर जीवन-खर्च।

वह एकल-अभिभावक परिवारों का खंभा है, सामाजिक जाल की रीढ़ है, वह शरू है जो सबको बचाती है जब उसे कोई नहीं बचाता।

उसकी अनुपस्थिति शहरी और संरचनात्मक है: जब व्यवस्था नाकाम होती है, तो कोई उसकी नहीं सुनता।

## **अमीर घमंड की महिला - 45 वर्ष**

न्यू जर्सी का दूसरा चेहरा उसके संपन्न उपनगर हैं: विशाल मकान, बेहतरीन स्कूल, सुव्यवस्थित मोहल्ले।

यहाँ की महिलाएँ लगातार दबाव में जीती हैं: – ठसाठस भरा पारिवारिक कार्यक्रम – बच्चों की गतिविधियाँ – ज़बरदस्ती की स्वयंसेवा – बेदाग सामाजिक छवि – रुतबे के प्रतीक के रूप में स्थापित विवाह – बेहद ऊँची अपेक्षाएँ।

वह कमज़ोर नहीं दिख सकती। वह असफल नहीं हो सकती। वह प्रदर्शन रोक नहीं सकती।

उसकी अनुपस्थिति पहचान का मसला है: उसे एक व्यक्ति नहीं, परिवार के एक काम के रूप में देखा जाता है।

### **उपसंहार – न्यू जर्सी**

न्यू जर्सी एक ऐसा राज्य है जो बहुत तेज़ और बहुत महँगा जीता है। उसे सच में महिलाएँ चलाती हैं, पर व्यवस्था उन्हें इस्तेमाल करते हुए ही मिटा देती है।

– रोज़ का आना-जाना – अदृश्य काम – अपर्याप्त सेवाएँ – ख़तरनाक मोहल्ले – अति-प्रतिस्पर्धी उपनगर – कठोर पारिवारिक भूमिकाएँ – सच्चे सहारे के बिना बहुसंस्कृतिवाद

राज्य उन्हीं की बदौलत चलता है, पर उनकी मेहनत की ओर कभी नहीं देखता।

### **चिंतन – न्यू जर्सी**

हर राज्य अनुपस्थिति का कोई न कोई रूप दिखाता है। न्यू जर्सी वह रूप दिखाता है जो एक ऐसी व्यवस्था से पैदा होता है जो बहुत ज़्यादा माँगती है और बहुत कम लौटाती है।

यह बीच का राज्य है: सत्ता के केंद्रों के बहुत पास, उनके अवसरों से बहुत दूर। यहाँ महिलाएँ लगातार दबाव में जीती हैं: समय का, पैसे का, ऊर्जा का, पहचान का।

यह किसी एक कारण का दोष नहीं है। यह सबका जोड़ है।

और ठीक यही बात न्यू जर्सी को इस खंड के केंद्र में रखती है: वह दिखाता है कि स्त्री की अनुपस्थिति एक भरी हुई ज़िंदगी से भी पैदा हो सकती है—हर चीज़ से भरी, सिवाय अपने लिए जगह के।

## न्यू मैक्सिको

न्यू मैक्सिको अमेरिका के सबसे मोहक और सबसे कठिन राज्यों में से एक है। निखालिस सुंदरता: विशाल रेगिस्तान, लाल घाटियाँ, मूल निवासी समुदाय, प्राचीन संस्कृति, आध्यात्मिकता, खामोशी। पर इस शक्तिशाली सौंदर्य के पीछे एक कहीं ज्यादा कठोर हकीकत छिपी है:

– ऐतिहासिक गरीबी – पुरानी लतें – कमज़ोर सार्वजनिक सेवाएँ – भौगोलिक अलगाव – कमज़ोर स्कूल – छिपी हुई घरेलू हिंसा – सीमा पार की नशीली दवाओं की तस्करी

यह एक ऐसा राज्य है जहाँ महिलाएँ संयोग से गायब नहीं होतीं: वे इसलिए गायब होती हैं क्योंकि वे एक ऐसे इलाके में रहती हैं जहाँ हर चीज़ भारी है—दूरी, इतिहास, संस्कृति, गरीबी, बंद समुदाय, अनिश्चित काम।

न्यू मैक्सिको परित्यक्त सुंदरता है। और उस परित्याग के भीतर वे महिलाएँ हैं जो सब कुछ जोड़े रखती हैं।

### **प्वेल्लो की मूल निवासी महिला – 43 वर्ष**

न्यू मैक्सिको में अमेरिका महाद्वीप की सबसे बड़ी मूल अमेरिकी आबादियों में से एक है: प्वेल्लो, नवाहो और अपाचे महिलाएँ।

वह दो दुनियाओं के बीच जीती है: – प्राचीन परंपराएँ – आधुनिक राज्य जो उसकी अनदेखी करता है।

वह झेलती है: – कम पैसे वाले स्कूल– न्यूनतम स्वास्थ्य सेवा– ठसाठस भरे घर– कम वेतन– बुनियादी सेवाओं तक सीमित पहुँच– सांस्कृतिक और भौगोलिक अलगाव।

वह बड़े परिवारों, पूरे समुदायों और भारी ज़िम्मेदारियों को संभालती है।

उसकी अनुपस्थिति ऐतिहासिक है: पिछले सौ वर्षों में राज्य ने उसके लोगों से सब कुछ छीन लिया और लगभग कुछ नहीं लौटाया।

## **गरीब इलाकों की लैटिना महिला – 35 वर्ष**

न्यू मैक्सिको अमेरिकी से ज़्यादा लैटिनो है। हर जगह स्पेनिश, मिश्रित परिवार और कड़ी मेहनत।

लैटिना महिलाएँ राज्य के पर्दे के पीछे हर जगह हैं: – सफ़ाई – खानपान – देखभाल – हल्की खेती – स्थानीय दुकानें – सामुदायिक सहारा।

वे बेहद कम वेतन और बढ़ते खर्चों पर जीती हैं। बहुत से परिवार किनारे पर जीते हैं। बिना कागज़ों के हालात और भी नाज़ुक हैं: डर, अदृश्यता, कोई असली मदद नहीं।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक और राजनीतिक है: वह कड़ी मेहनत करती है, पर उसका प्रतिनिधित्व कभी नहीं होता।

## **हर चीज़ से दूर रहने वाली महिला – 52 वर्ष**

न्यू मैक्सिको विशाल है, पर ख़ाली। नन्हे कस्बे, रेगिस्तान में घर, घंटों की दूरी पर बसे शहर।

यहाँ की महिला झेलती है: – पूरा अकेलापन – दूर की स्वास्थ्य सेवा – शून्य परिवहन – कठोर सर्दियाँ, बेरहम गर्मियाँ – कभी न बदलने वाली दिनचर्या – कम काम – आसपास फैली लतें।

अगर वह गिर जाए, तो कोई नहीं आता। अगर उसे डॉक्टर चाहिए, तो वह घंटों गाड़ी चलाती है। अगर उसे समस्याएँ हों, तो वह खुद उन्हें सँभालती है।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है: वह विस्तार में गायब हो जाती है।

## **पर्यटन-आध्यात्मिक क्षेत्र में काम करने वाली महिला – 30 वर्ष**

न्यू मैक्सिको “आध्यात्मिक” पर्यटन को खींचता है: कला, ध्यान, रेगिस्तान, रिट्रीट, मूल निवासी संस्कृति।

काव्यात्मक छवि के पीछे वे महिलाएँ हैं जो अर्थव्यवस्था को थामे रखती हैं: – बी&बी- सांस्कृतिक गाइड- गैलरियाँ- छोटे रेस्तराँ- दस्तकारी की दुकानें- मौसमी सेवाएँ।

यह एक अस्थिर क्षेत्र है: भीड़ के मौसम में बढ़िया कमाई, बाक़ी महीनों में लगभग कुछ नहीं।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: इलाक़े की सुंदरता पैसा खींचती है, पर वहाँ रहने वालों के लिए उसे रोककर नहीं रखती।

### **उपसंहार – न्यू मैक्सिको**

न्यू मैक्सिको दो छोरों के बीच मौजूद राज्य है: पूर्ण सुंदरता और पुरानी गरीबी। गहरी आध्यात्मिकता और राजनीतिक उपेक्षा। मज़बूत परंपरा और कमज़ोर सेवाएँ।

यहाँ की महिलाएँ सब कुछ अपने कंधों पर उठाती हैं: मूल निवासी समुदाय, लैटिनो परिवार, अलग-थलग रेगिस्तान, कला के शहर, न्यूनतम काम।

और जब वे राज्य को थामे रखती हैं, उन्हें कोई नहीं थामता।

यह एक ऐसी अनुपस्थिति है जो शोर नहीं करती क्योंकि भूदृश्य बहुत सुंदर है। और सुंदरता हर चीज़ ढँक देती है।

### **चिंतन – न्यू मैक्सिको**

हर राज्य अनुपस्थिति का एक अलग रूप दिखाता है। न्यू मैक्सिको वह रूप दिखाता है जो दूरी और अनसुलझे इतिहास से बना है।

यहाँ महिला को कोई एक ताक़त नहीं मिटाती। उसे सब कुछ मिलकर मिटाता है:

– भूगोल – संस्कृति – परंपरा – गरीबी – अलगाव – पारिवारिक भूमिकाएँ – सेवाओं का अभाव – राजनीतिक अदृश्यता

यह एक प्राचीन मिटाया जाना है। लगभग पुश्तैनी।

और इसीलिए यह अध्याय ज़रूरी है: क्योंकि न्यू मैक्सिको समय की भुलाई हुई जगह नहीं है। वह राज्य की भुलाई हुई जगह है। और महिलाएँ हर दिन इसकी क्रीमत चुकाती हैं।

## न्यूयॉर्क राज्य

न्यूयॉर्क एक शहर नहीं है। वह शरीर पर चोट करता है। वह एक लहर है जो तुम्हें पकड़ लेती है और घसीट ले जाती है, चाहे तुम न चाहो। वह एक ऐसी मौजूदगी है जो इजाज़त नहीं माँगती। तुम यहाँ क़दम रखते हो और तुरंत समझ जाते हो कि जो वह तय करता है, उसे तुम तय नहीं करते।

यह दुनिया की इकलौती जगह है जहाँ तुम लाखों लोगों से घिरे रहकर भी किसी रेगिस्तान से ज़्यादा अकेले महसूस कर सकते हो। यह एक ऐसा शहर है जो तुम्हें देखता है, नापता है, परखता है, खपाता है, और अगर तुम उसकी रफ़्तार से नहीं चल पाते, तो पीछे मुड़कर देखे बिना तुम्हें छोड़ देता है।

न्यूयॉर्क तुम्हारा स्वागत नहीं करता। वह तुम्हें परखता है।

यह दुनिया की राजधानी है, पर अदृश्य लोगों की राजधानी भी। वह शहर जो सिर्फ़ जीतने वालों को दिखाता है, और उन हज़ारों महिलाओं को भूल जाता है जो उसके हर इंच को चलाती हैं। वे जो दूसरों की ज़िंदगी थामे रखती हैं, जबकि उसे कोई नहीं थामता।

न्यूयॉर्क एक साथ सब कुछ है: हिंसक ढंग से दिखाई जाने वाली दौलत और ऐसी गरीबी जिसकी अब कोई आवाज़ नहीं, ऐसे मोहल्ले जो पाँच साल में चेहरा बदल लेते हैं और ऐसे मोहल्ले जो पचास साल में नहीं बदले, घुलती-मिलती भाषाएँ, एक-दूसरे पर चढ़ती संस्कृतियाँ, एक-दूसरे से टकराते शरीर, ऐसी ज़िंदगियाँ जो कभी सच में एक-दूसरे से बात नहीं करतीं।

यह लगातार गति पर बना शहर है: भीड़ भरी ट्रेनों में चढ़ना-उतरना, गंदी, चमकती सड़कों पर चलना, ऐसा काम ढूँढ़ना जो तुम्हें डूबने न दे, ऑर्डर पहुँचाने के लिए भागना, क्लिनिक, स्कूल, घर, काम की पालियों की ओर, हज़ार अलग-अलग दिशाओं में जाना। यह एक ऐसा इलाक़ा है जो तुमसे बहुत वादा करता है, पर देता सिर्फ़ उतना है जितना तुम छीन लो।

न्यूयॉर्क उन महिलाओं की बदौलत चलता है जो उन टुकड़ों को जोड़े रखती हैं जिन्हें बाक़ी लोग अनदेखा करते हैं: वे जो गगनचुंबी इमारतों की ऊपरी मंज़िलों पर काम करती हैं, वे जो निचली मंज़िलों के फ़र्श साफ़ करती हैं, वे जो उन परिवारों के बच्चे पालती हैं जिनके पास वक़्त नहीं, वे जो ऐसे मोहल्लों में ज़िंदा

रहती हैं जिनकी ओर कोई देखना नहीं चाहता, वे जो एक ऐसे शहर का सामना करती हैं जो तुमसे सब कुछ माँगता है और तुम्हें हमेशा अधूरा छोड़ देता है।

यहाँ महिला एक साथ तीन स्तर का दबाव झेलती है:

### **1. रफ़्तार का दबाव:**

अगर तुम धीमी पड़ीं, तो गायब हो जाओगी। न्यूयॉर्क किसी का इंतज़ार नहीं करता और तुम्हारे लिए कोई अपवाद नहीं बनाता।

### **2. खर्च का दबाव:**

यहाँ हर चीज़ बहुत महँगी है—घर, समय, ऊर्जा, पहचान। और हर दिन एक आर्थिक चुनौती बन जाता है।

### **3. मौजूदगी का दबाव:**

तुम्हें हमेशा मौजूद रहना है, टिके रहना है, काम करते रहना है, थामे रहना है।

पर तुम्हें कौन थामता है?

न्यूयॉर्क सुंदर है और क्रूर भी: वह तुम्हें असली अवसर देता है, पर बेहद ऊँची क्रीमत माँगता है।

यहाँ की महिला कोई कमज़ोर मौजूदगी नहीं है। वह रोज़ ज़िंदा रहने की मशीन है। वही स्कूलों, अस्पतालों, रेस्तराँओं, सफ़ाई, सार्वजनिक सेवाओं, परिवहन, परिवारों, गगनचुंबी इमारतों, कारोबारों और मोहल्लों को आगे बढ़ाती है।

फिर भी शहर की कहानी में उसकी आवाज़ केंद्र में नहीं है। वह पृष्ठभूमि है। काम की चीज़ है। ज़रूरी है, पर सराही नहीं जाती। मौजूद है, पर सुनी नहीं जाती।

न्यूयॉर्क वह शहर है जो सब कुछ नुमाइश पर रखता है, सिवाय उनके जो उसे सच में चलाते हैं।

और ठीक इसीलिए इस खंड में उसकी जगह अलग है। वह बाक़ी राज्यों जैसा राज्य नहीं है। वह वह बिंदु है जहाँ अमेरिका की सारी स्त्री-अनुपस्थितियाँ आकर

मिलती हैं: आर्थिक, सांस्कृतिक, शहरी, भाषाई, नस्लीय, पेशेवर और भावनात्मक।

यह हर उस चीज़ का सूक्ष्म जगत है जो काम करती है और हर उस चीज़ का जो नहीं करती।

यहाँ महिलाएँ हर जगह हैं। फिर भी वे एक पल में गायब हो सकती हैं। बस इतना काफ़ी है कि उनकी रफ़्तार शहर की रफ़्तार से धीमी पड़ जाए।

न्यूयॉर्क बड़ा है, पर इतना बड़ा नहीं कि एक महिला की ज़िंदगी का बोझ उसमें समा सके। और यह अध्याय यही साबित करता है: दुनिया का सबसे मशहूर शहर सबसे न्यायपूर्ण नहीं है। वह सिर्फ़ सबसे ज़्यादा दिखने वाला है। और उसकी रोज़ की ज़िंदगी के अपार शोर में महिला ख़ामोशी में खो जाती है।

मैनहैटन

### **ओलिविया, 39 – मिडटाउन, ऊँची इमारतों के दफ़्तर और भागती ज़िंदगी**

ओलिविया 7:10 पर सबवे पकड़ती है। लाइन 6, खड़े-खड़े, हाथ में फ़ोन, आँखें पहले से ईमेल की धारा पर टिकी हुई।

वह मिडटाउन की एक काँच की इमारत की सत्ताईसवीं मंज़िल पर काम करती है। वह एक ऐसी कंपनी में प्रोजेक्ट मैनेजर है जो ऐसी सेवाएँ बेचती है जिन्हें कोई ठीक-ठीक समझा नहीं सकता। सब आँकड़ों, अनुमानों, तिमाही लक्ष्यों की बात करते हैं। लोगों की बात कोई नहीं करता।

ओलिविया की छह साल की बेटी है, जो दिन में दो घंटे उसके साथ जागती है। सुबह, उसे कपड़े पहनाने के लिए; शाम को, उसे सुलाने के लिए। बाक़ी सब दूसरों के ज़िम्मे है: बेबीसिटिंग, स्कूल, स्कूल के बाद की गतिविधियाँ, जल्दी-जल्दी के मैसेज।

उसका बॉस उससे “लचीलापन” माँगता है, पर लचीलापन हमेशा एकतरफ़ा होता है: – लंबी खिंचती मीटिंगें – समय से बाहर जाती कॉल – गढ़ी हुई आपात स्थितियाँ – ऐसे प्रोजेक्ट जिन्हें “आज रात तक” पूरा करना है।

मैनहैटन को अवसरों के शहर के रूप में बेचा जाता है। ओलिविया के लिए यह एक ऐसा शहर है जो उसका समय चुराता है और उसे होम डिलीवरी, लॉन्ट्री और पैसे देकर ली गई सेवाओं के रूप में वापस बेचता है।

शाम को, जब वह दफ़्तर से निकलती है, इमारतों की रोशनियाँ मज़ाक़ लगती हैं। सब कुछ चमकता है, सिवाय उसकी ज़िंदगी के।

ओलिविया की अनुपस्थिति सस्ती नहीं है। वह समय खा जाती है। वह हर जगह मौजूद है, सिवाय वहाँ के जहाँ सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।

मैं, नांदो, जब उसे थर्ड एवेन्यू पार करते देखता हूँ, उस इंसान की तेज़ चाल से जो धीमा पड़ने का जोखिम नहीं उठा सकता, तो मुझे एक सीधी बात दिखती है: एक महिला जो एक ऐसे शहर को थामे रखती है जो उसे कभी नहीं थामेगा।

— नांदो

ब्रुकलिन

### **आयशा, 31 – बेडफ़र्ड-स्टायवेसेंट, उल्टी दिशा में जेंट्रिफ़िकेशन**

आयशा का जन्म बेड-स्टाय में हुआ, जो ऐतिहासिक रूप से एक अश्वेत मोहल्ला है। रैप, इतिहास, परिवार, चर्च और गर्मियों में फुटपाथ पर बारबेक्यू।

फिर आए “कलाकार”, निवेशक, नई कॉफ़ी शॉप, पट्टे में बँधे नस्ली कुत्ते, और बेतुके ढंग से बढ़ती क़ीमतें। वही पुरानी कहानी।

आयशा एक स्थानीय सरकारी स्कूल में काम करती है। उसके छात्र ऐसे परिवारों से आते हैं जिन्हें हर साल बेदखली का सामना करना पड़ता है। बचपन के उसके बहुत से सहपाठी अब वहाँ नहीं रहते, “पुनर्विकास” की परियोजनाओं ने उन्हें बाहर धकेल दिया।

वह पढ़ाती है, सुनती है, झगड़े सुलझाती है, बचाती है। दिन में वह शिक्षिका है, मनोवैज्ञानिक है, बड़ी बहन है, ढाल है। रात में वह किराए की रसोई की मेज़ पर बैठकर होमवर्क जाँचती है, इस डर के साथ कि एक दिन वह उस घर का खर्च नहीं उठा पाएगी।

शहर ब्रुकलिन को "कूल" कहकर उसका जश्र मनाता है। आयशा के पास "कूल" होने का वक्त नहीं है: उसे ज़िंदा रहना है।

उसकी अनुपस्थिति शहरी और राजनीतिक है: वह मोहल्ला जिस पर सब सट्टा लगाते हैं, अकेला वही है जिसकी सच में कोई नहीं सुनता।

— नांदो कींस

## **मारिया फ़र्नांडा, 42 – जैक्सन हाइट्स, एक में तीन दुनिया**

शरीर

मारिया फ़र्नांडा इकाडोर से है। वह कींस के जैक्सन हाइट्स में रहती है: वह जगह जहाँ एक ही ब्लॉक में दस अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं, और उनमें से कोई भी सत्ता की भाषा नहीं है।

वह रात में मैनहैटन में दफ़्तरों की सफ़ाई करती है और ज़रूरत पड़ने पर दिन में बेबीसिटिंग। नौद घंटे के हिसाब से मिलने वाली विलासिता है।

उसके दो बच्चे हैं: एक क्वीटो में पैदा हुआ, एक न्यूयॉर्क में। बड़ा उससे पूछता है कि वह कभी घर पर क्यों नहीं होती। छोटा मान लेता है कि उसकी माँ हमेशा जल्दी में रहती है।

मारिया अपनी माँ को पैसे भेजती है, जो इकाडोर में रह गई। वह दो महाद्वीपों को संभालती है। एक ही शरीर से।

उसकी ज़िंदगी एक लगातार आना-जाना है: कींस → मैनहैटन → कींस। धीमी ट्रेनें, भारी थैले, थकी टाँगें।

उसे सच में कोई नहीं देखता। जिस अमेरिकी बच्ची की वह देखभाल करती है, उसके माता-पिता के लिए वह "मैरी" है। सफ़ाई करने वाली साथियों के लिए वह "वह औरत जो कभी नहीं रुकती" है।

उसकी अनुपस्थिति भाषाई और सामाजिक है: वह उस न्यूयॉर्क को चलाती है जो काम करता है, पर किसी आधिकारिक कहानी का हिस्सा नहीं है।

मैं, नांदो, एक रविवार की सुबह रूज़वेल्ट एवेन्यू पर उससे मिलता हूँ और मेरे मन में बस एक ही बात आती है: यह देश सिर्फ़ इसलिए खड़ा है क्योंकि उस

जैसी महिलाएँ उसे गिरने नहीं देतीं। — नांदो

ब्रॉन्क्स

### **कीशा, 29 – साउथ ब्रॉन्क्स, रोज़ का प्रतिरोध**

कीशा साउथ ब्रॉन्क्स में रहती है। जर्जर इमारतें, बार-बार बजते सायरन, सस्ती दुकानें, टूटे फुटपाथों पर खेलते बच्चे।

वह अकेले दो बच्चे पाल रही है। उनका पिता बरसों पहले वादों और माफ़ियों के बीच गायब हो गया।

वह एक सुपरमार्केट में काम करती है, शाम की पाली: – तेज़ कैश काउंटर – चिड़चिड़े ग्राहक – हर मिनट पर नज़र रखने वाले मैनेजर – ऐसा वेतन जो कभी पूरा नहीं पड़ता।

दिन में वह दौड़ती रहती है: – बच्चों को स्कूल ले जाना – शिक्षकों से बात करना – सब्सिडी देखने वाले दफ़्तर से बहस करना – एक-एक डॉलर गिनकर खरीदारी करना।

उसके पास अपने बारे में सोचने का वक़्त नहीं है। वह बस इतना जानती है कि उसे उन दो बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा रखना है।

ब्रॉन्क्स को आज भी एक समस्या की तरह दिखाया जाता है। कीशा वह हल है जिसे कोई नहीं पहचानता: वह माँ जो एक ऐसे मोहल्ले को थामे रखती है जिसे नेता सिर्फ़ पृष्ठभूमि की तरह इस्तेमाल करते हैं।

उसकी अनुपस्थिति संरचनात्मक है: जो कुछ होता है उसके केंद्र में वही है, पर व्यवस्था के लिए उसका अस्तित्व नहीं है।

— नांदो

स्टेटन आइलैंड

### **जीना, 45 – दो शहरों के बीच अदृश्य मुसाफ़िर**

जीना स्टेटन आइलैंड में रहती है। वह मैनहैटन के एक बीमा दफ़्तर में काम करती है। हर दिन वही दिनचर्या:

– बस – फ़ेरी – मेट्रो – दफ़्तर – और फिर सब कुछ शुरू से उल्टा।

मैनहैटन वालों के लिए स्टेटन आइलैंड मुश्किल से मौजूद है। नक्शे का एक कोना, ढेर का सबसे निचला हिस्सा। पर जीना के लिए यह घर है। और एक पिंजरा भी।

वह नौकरी बदलना चाहती है, पर हर गंभीर अवसर दूर है। वह अपने बच्चों के लिए ज़्यादा वक़्त चाहती है, पर वह वक़्त परिवहन को दे देती है। वह चाहती है कि हर शाम थकी न रहे, पर शहर अपने किनारों पर रहने वालों से अच्छा बर्ताव नहीं करता।

उसकी अनुपस्थिति समय की भी है और जगह की भी: वह एक ऐसी जगह रहती है जो उसे अलग-थलग करती है, और एक ऐसी जगह काम करती है जो उसे इस्तेमाल करती है।

मैं, नांदो, उसे फ़ेरी पर खड़ी कल्पना करता हूँ, हाथ में कॉफ़ी का कप, आँखें स्काईलाइन में खोई हुईं। सामने न्यूयॉर्क। उसकी ज़िंदगी बीच में।

— नांदो

वॉल स्ट्रीट

### **रेचल, 37 – वह महिला जो टूट नहीं सकती।**

रेचल वित्तीय क्षेत्र में काम करती है। उसके पास औसत होने की विलासिता नहीं है। उस माहौल में नहीं। एक महिला के रूप में नहीं।

उसने तेज़ बोलना सीखा, लहजे में कभी ग़लती न करना सीखा, कभी हिचकिचाहट न दिखाना सीखा। किसी को टूटने की माफ़ी नहीं मिलती, पर एक महिला का टूटना उम्र भर का दाग़ बन जाता है।

दिन मशीनें हैं: आँकड़े, ग्राफ़, कॉल, मीटिंगें, एक के बाद एक ईमेल, कारोबारी डिनर, बहुत जल्दबाज़ी में लिए गए फ़ैसले जिनके नतीजे बहुत बड़े हैं।

जब वह घर लौटती है, तो ख़ाली होती है। उदास नहीं: ख़ाली। उसके पास काम के बाहर कुछ भी बनाने की ऊर्जा नहीं है। अधूरे रिश्ते, टूटी दोस्तियाँ, दूर का परिवार।

न्यूयॉर्क सम्मेलनों, सशक्तिकरण के आयोजनों और पैनलों में वॉल स्ट्रीट पर महिलाओं की सफलता की तालियाँ बजाता है। फिर, जैसे ही माइक्रोफ़ोन बंद होता है, सब कुछ पहले जैसा हो जाता है।

उसकी अनुपस्थिति भावनात्मक है: वह हर उस कमरे में मौजूद है जहाँ फ़ैसले होते हैं, पर वहाँ बैठने के लिए उसे अपना एक हिस्सा छोड़ना पड़ा।

इस कहानी की कोई सीख नहीं है। बस एक खुला हिसाब है।

— नांदो

लैटिना नैनी

### ***डोलोरेस, 54 – अपर ईस्ट साइड, दूसरों के बच्चे पालती है।***

डोलोरेस मैक्सिको से आई है। वह बीस साल से न्यूयॉर्क में रहती है। बीस साल से वह ऐसे घरों में आती-जाती है जो कभी उसके नहीं होंगे।

वह अपर ईस्ट साइड में काम करती है, विशाल अपार्टमेंटों, दरबानों, खामोश लिफ्टों और ऐसी रसोइयों के बीच जो क्रीस के उसके पूरे एक-बेडरूम अपार्टमेंट से बड़ी हैं। उसने एक ऐसे परिवार में चार बच्चे पाले जो उसे “लगभग परिवार” मानता है। “लगभग।” एक शब्द जो सब कुछ कह देता है।

उसने उन्हें पहले क़दम रखते देखा, उनका रोना सुना, उनके आँसू पोछे, नाश्ता बनाया, उन्हें स्कूल पहुँचाया, उनकी दोपहरें फ़िल्माई, उनकी बातें सुनीं।

जब वे बच्चे बड़े होते हैं, तो चले जाते हैं। डोलोरेस रह जाती है।

उस शाम वह देर से घर लौटती है। उसका अपना बेटा, अब बड़ा हो चुका, आज भी उसके लिए एक तरह का सम्मान रखता है, नाराज़गी के साथ मिला हुआ: बचपन में उसने उसे बहुत कम देखा। वह दूसरों की माँ बनने में व्यस्त थी।

उसकी अनुपस्थिति दोहरी है: दूसरों की ज़िंदगी में मौजूद माँ, अपने ही परिवार से ग़ैरहाज़िर माँ।

और अमेरिका यह सब एक वाक्य में समेट देता है: “यही काम है।”

— नांदो

बेघर महिला

### **मोनीक, 51 – मिडटाउन, लाखों के बीच अदृश्य**

मोनीक जहाँ जगह मिले वहीं सोती है। कभी किसी आश्रय में, कभी किसी बंद दुकान के शीशे के सामने गते के टुकड़े पर, कभी किसी सबवे स्टेशन की कुर्सी पर।

कभी उसके पास घर था, साथी था, नौकरी थी। फिर वही पुराना चक्कर: बीमारी, कर्ज, नौकरी जाना, मानसिक टूटन, थामने वाला कोई नहीं। वह अश्वेत है, पचास से ऊपर है, और उसका एक शरीर है जिसे वह सड़कों पर बिताई हर सर्दी में देती है।

सुबह, जब शहर काम की ओर भागता है, वह वहीं होती है। वही सड़क, वही कोना, वही नज़र जिससे कोई नज़र मिलाना नहीं चाहता।

उसकी अनुपस्थिति पूरी है: व्यवस्था के लिए अब वह कुछ नहीं है। न मज़दूर, न उपभोक्ता, न "काम की"। इसलिए उसका अस्तित्व नहीं है।

मैं, नांदो, जब भी न्यूयॉर्क में किसी महिला को सड़क पर देखता हूँ, खुद से वही सीधा सवाल पूछता हूँ: उसके यहाँ पहुँचने के लिए राज्य को कितनी सीढ़ियाँ छोड़नी पड़ीं?

जवाब हमेशा एक ही है: बहुत सारी। नांदो

बड़ा अस्पताल

### **सोफ़िया, 34 वर्ष – दो पालियों के बीच नर्स और बिना**

साँस

सोफ़िया अस्पताल में तब दाखिल होती है जब बहुत से लोग अभी सो रहे होते हैं। पाली सुबह 7 बजे से शाम 7 बजे तक है। अगर सब ठीक रहा। क्योंकि कुछ विभागों में "अगर सब ठीक रहा" होता ही नहीं।

वह मैनहैटन के एक बड़े अस्पताल में काम करती है। अंतहीन गलियारे, नियॉन रोशनियाँ, अलार्म, मॉनिटर, टूटी आवाज़ें, मशीनों से जुड़े शरीर, सवाल पूछते

रिश्तेदार, भागते डॉक्टर।

सोफ़िया ढह जाने का जोखिम नहीं उठा सकती। हर काम के नतीजे होते हैं। हर चूक भारी पड़ती है।

पाली के अंत में भी उसके पास रह जाते हैं: – कहानियाँ जो खत्म नहीं होतीं – नज़रें जिन्हें वह भूलती नहीं – ख़बरें जो उसे धीमे से कहनी पड़ें – ज़िम्मेदारियाँ जो कोई उससे नहीं ले सकता। अस्पताल के बाहर न्यूयॉर्क ऐसे दौड़ता है जैसे कुछ हो ही न रहा हो। भीतर, वह शहर के सबसे नाज़ुक हिस्से को थामे रखती है।

उसकी अनुपस्थिति भावनात्मक भी है और संस्थागत भी: वह स्वास्थ्य-व्यवस्था के दिल में है, पर उसकी आवाज़ की उतनी गिनती नहीं होती जितनी उसके टिके रहने की।

मैं, नांदो, वर्दी पहनी इन महिलाओं को पाली के बाद थककर निकलते देखता हूँ और एक सीधी बात समझता हूँ: अगर एक दिन वे सब एक साथ रुकने का फ़ैसला कर लें, तो शहर 48 घंटों में ढह जाएगा।

— नांदो

रेस्तराँ

## **जूलिया, 27 – लोअर ईस्ट साइड, प्लेटें, मेज़ें और दबाई हुई**

गरिमा

जूलिया इतालवी अमेरिकी है, पर उस न्यूयॉर्क की जिसे असली इतालवी अब नहीं जानते। पोस्टकार्ड वाली लिटिल इटली नहीं, बल्कि लोअर ईस्ट साइड के एक रेस्तराँ में अंतहीन पालियाँ।

वह वेट्रेस है, पर उससे कहीं ज़्यादा करती है: – कामचलाऊ मनोवैज्ञानिक – चिड़चिड़े ग्राहकों के लिए बिजली का खंभा – रसोई और हॉल के बीच की ढाल – दिखाने के लिए सुंदर मौजूदगी – शरीर हमेशा सीधा, मुस्कान हमेशा चालू

टिप तय करती है कि हफ़्ता गुज़ारे लायक़ है या बस थोड़ी राहत। मूल वेतन हास्यास्पद है, जैसा इस धंधे में हमेशा होता है।

शाम के अंत में वे उससे सबसे बेवकूफ़ सवाल पूछते हैं: “और असल में तुम क्या करती हो?”

जैसे यह “असल” काम न हो। उसकी अनुपस्थिति सामाजिक है: भूख लगने पर सबको उसकी ज़रूरत होती है, अधिकारों की बात आने पर कोई उसका खयाल नहीं करता।

मैं, नांदो, हॉल में आठ घंटे की पाली सँभाल लेने वाली महिला की उस आदमी से कहीं ज़्यादा इज़्ज़त करता हूँ जो मेज़ पर बैठकर सोचता है कि वह सिर्फ़ पैसे देने की वजह से ज़्यादा क़ीमती है।

— नांदो

रचनात्मक उद्योग

### **लिआ, 36 – ब्रुकलिन, एक रचनाकार जो कभी अपना**

दिमाग़ बंद नहीं कर सकती।

लिआ ब्रुकलिन और मैनहैटन की एक प्रोडक्शन कंपनी में लेखिका और प्रोड्यूसर के रूप में काम करती है। सीरीज़, कैपेन, कंटेंट। हमेशा कुछ गढ़ने को, हमेशा किसी को मनाने को, हमेशा एक हास्यास्पद डेडलाइन।

एक नए प्रोजेक्ट की लॉन्च पार्टी में सब “विज़न”, “स्टोरीटेलिंग” और “नई कहानियों” की बात करते हैं। कोई बिना नींद की रातों, अंतहीन संशोधनों, चुराए गए विचारों या “काम के प्रति जुनून” का भेस धरे बर्नआउट की बात नहीं करता।

लिआ बुशविक में एक साझा अपार्टमेंट में रहती है। हो सकता है उसने “करियर बना लिया” हो, पर शहर का खर्च हर तरक्क़ी को खा जाता है।

उसकी अनुपस्थिति पेशेवर है: न्यूयॉर्क रचनात्मकता को आज़ादी बताकर बेचता है, पर उसकी रचनात्मकता बजट, कॉल, बेतुकी माँगों और लगातार दबाव से बँधी है।

वह कल्पना पैदा करती है। उससे कमाई दूसरे करते हैं।

— नांदो

टुकड़ों में फ़्रीलांस

### **प्रिया, 33 – तीन काम, शून्य सुरक्षा**

प्रिया का जन्म क्वींस में भारतीय माता-पिता के घर हुआ। वह पढ़ी-लिखी है और उसका दिमाग़ विचारों से भरा है, पर न्यूयॉर्क के रोज़गार बाज़ार ने उसे एक साफ़ पैकेज थमा दिया है: उम्र भर फ़्रीलांस।

वह उन एजेंसियों के लिए ग्राफ़िक डिज़ाइन करती है जो उसे “बाहरी सहयोगी” कहती हैं, उन ब्रांडों के लिए कंटेंट लिखती है जो कभी उसका नाम नहीं लेते, और कभी-कभी किराया जुटाने के लिए छोटे कोर्स पढ़ाती है।

उसके पास न छुट्टी है, न बीमारी की छुट्टी, न बोनस, कुछ भी पक्का नहीं। उसके पास सिर्फ़ ज़िम्मेदारियाँ हैं।

दिन में वह काम पहुँचाती है। रात में वह अपने ईमेल देखती है, इस उम्मीद में कि उसे एक और “कल तक हमें चमत्कार चाहिए” न मिले।

शहर कहना पसंद करता है, “यहाँ, अगर तुममें प्रतिभा है, तो तुम कामयाब हो सकते हो।” पर सच कुछ और है: यहाँ, अगर तुममें प्रतिभा है, तो वे तुम्हें तब तक निचोड़ेंगे जब तक तुममें कुछ न बचे।

उसकी अनुपस्थिति अनुबंध की है: वह संचार, कैपेन और प्रोजेक्ट के टुकड़े सँभालती है, पर कागज़ पर वह हमेशा “आउटसोर्स” है।

मैं, नांदो, तुम जैसी किसी इंसान के चेहरे पर साफ़ धोखा देखता हूँ: भरा हुआ काम, ख़ाली ज़िंदगी।

— नांदो

सरकारी आवास

### **तान्या, 44 – ईस्ट हार्लेम, माँ, देखभाल करने वाली, निशाना**

तान्या ईस्ट हार्लेम के एक सरकारी आवास परिसर में रहती है। इमारतें पुरानी हैं, ठीक से रखी नहीं जातीं, लिफ़्टें अक्सर ख़राब हो जाती हैं, और सीढ़ियाँ घिस चुकी हैं।

वह तीन बच्चों की माँ है। वह एक स्थानीय स्कूल में सहायिका के रूप में काम करती है। वह कम किराया देती है, पर असली क्रीमत कुछ और है: एक ऐसी जगह में रहना जिसे राज्य अब अपना नहीं मानता।

हर दिन इनके बीच बँटा है: – काम – स्कूल की मीटिंगें – पड़ोसियों की मदद – सब्सिडी के लिए कागज़ी कार्रवाई – मुश्किल माहौल में बड़े हो रहे बच्चों की चिंता – झगड़ों, पुलिस, सायरनों का शोर।

उसकी अनुपस्थिति राजनीतिक है: उसका मोहल्ला सिर्फ़ तब मौजूद होता है जब “सामाजिक समस्याओं” पर बात करने के लिए किसी तस्वीर की ज़रूरत हो।

इस बीच, उसे ज़िंदा रखने वाली वही है, और उस जैसी महिलाएँ, जो हर चीज़ के खिलाफ़ दीवार बनकर खड़ी हैं।

न्यूयॉर्क विकास, पुनर्जीवन और निवेश की बात करता है। पर जब तुम कुछ इमारतों की सीढ़ियाँ चढ़ते हो, तो समझ जाते हो कि बहुत सी बरसों से छोड़ दी गई हैं।

— नांदो

घरेलू हिंसा

### **रोसा, 38, क्रीस, डर और कागज़ों के बीच फँसी।**

रोसा डोमिनिकन रिपब्लिक से है। वह क्रीस के एक कभी न ख़त्म होने वाले हिस्से में एक साझा अपार्टमेंट में रहती है।

उसका पति कभी-कभार काम करता है और बारी-बारी से: कुछ दिन माफ़ी माँगता है, कुछ दिन चिल्लाता है, कुछ दिन धक्का देता है, कुछ दिन मारता है। रोसा तीन वजहों से नहीं जाती: – वह डरती है – उसके पास पैसे नहीं हैं – उसे देश में रहने का परमिट खोने का डर है।

रात में, जब वह सो रहा होता है, वह ऐसा दिखाती है जैसे कुछ हो ही नहीं रहा। सुबह वह चोट के निशान छिपाने के लिए मेकअप करती है और एक लॉन्ड्रोमैट में काम पर जाती है।

व्यवस्था उससे कहती है: “फ़ोन करो, मदद माँगो, निकल जाओ।” पर हक़ीक़त ज़्यादा गंदी है: भरे हुए आश्रय, प्रतीक्षा सूचियाँ, बोझ से दबे सामाजिक कार्यकर्ता, बहुत कम असली सुरक्षा।

उसकी अनुपस्थिति क़ानूनी है: वह क़ानूनों, कागज़ों, डर और विकल्पों के अभाव के एक शून्य में फँसी है।

मैं, नांदो, बाहर से देख रहा हूँ और जानता हूँ कि “अगर वह चाहे, तो जा सकती है” वाला वाक्य इस दुनिया के गढ़े सबसे झूठे और कायर वाक्यों में से एक है।

— नांदो

अति-रूढ़िवादी मोहल्ले

### **हाया, 29 – बरो पार्क, जन्म से पहले तय ज़िंदगी।**

हाया ब्रुकलिन के बरो पार्क में रहती है। एक अति-रूढ़िवादी यहूदी मोहल्ला। कड़े नियम, बंद समुदाय, तय भूमिकाएँ।

उसकी ज़िंदगी तब तय हो गई थी जब उसकी कोई राय भी नहीं हो सकती थी: – बहुत कम उम्र में विवाह – बहुत से बच्चे – कोई असली स्वायत्तता नहीं – केंद्र में धार्मिक अध्ययन – बाहर की दुनिया को ख़तरे की तरह देखना।

उसका दिन भरा हुआ है: घर, बच्चे, ख़रीदारी, खाना पकाना, रीतियाँ, लगातार माँगें। कभी सच्ची ख़ामोशी का एक पल नहीं, कभी सिर्फ़ अपने लिए कोई जगह नहीं। हाया के मन में ऐसे विचार हैं जिन्हें वह कह नहीं सकती। ऐसे सवाल जिन्हें वह पूछ नहीं सकती। इस बात का अंदेशा कि बाहर क्या हो सकता है, पर वहाँ पहुँचने का कोई नक्शा नहीं।

उसकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक और आध्यात्मिक है: वह अपनी दुनिया के हर इशारे में मौजूद है, पर ढाँचे से अलग एक व्यक्ति के रूप में मौजूद नहीं हो सकती।

न्यूयॉर्क विविधता की तालियाँ बजाता है, पर यह मानकर खुश है कि कुछ महिलाएँ “अदृश्य” सांस्कृतिक पिंजरों में जिएँ, बशर्ते वे दूसरों को परेशान न करें।

— नांदो

नेल सैलून

### **ली मेई, 41 – फ़्लशिंग, बेदाग हाथ, खपी हुई ज़िंदगी**

ली मेई क्रीस के फ़्लशिंग में एक नेल सैलून में काम करती है। ग्राहक के बाद ग्राहक, नाखून के बाद नाखून, नेल पॉलिश रिमूवर की गंध, मुँह पर मास्क, झुकी हुई पीठ।

वह दस साल से भी पहले चीन से आई थी। उसे तुरंत काम मिल गया: नक़द, लंबी पालियाँ, कम सवाल।

वह हफ़्ते में छह दिन, दिन में दस घंटे काम करती है। कभी-कभी उससे भी ज़्यादा।

ग्राहकों के लिए वह जगह का एक सामान है: “वह औरत जो नाखून अच्छे से और चुपचाप बनाती है।”

कोई खुद से नहीं पूछता: – उनकी जेब में कितना पैसा बचता है – वे कितनी बार रसायन साँस में लेती हैं – उनके पास स्वास्थ्य बीमा है या नहीं – वे रात को बिना दर्द के सो पाती हैं या नहीं। उसकी अनुपस्थिति रासायनिक और सामाजिक है: वह नियॉन रोशनियों के नीचे धीरे-धीरे घिसती जाती है, दूसरों के हाथ सुंदर बनाती है, जबकि किसी का ध्यान नहीं जाता कि उसके अपने हाथ कैसे हैं।

मैं, नांदो, उसे शाम को दुकान बंद करते और पैसे गिनते हुए कल्पना करता हूँ। मुनाफ़ा नहीं: गुंजाइश। तैरते रहने और थोड़ा और गहरे डूबने के बीच का फ़र्क़।

— नांदो

रात की महिला

### **जैस्मिन, 28 – टाइम्स स्केयर, चमकती रोशनियाँ, नाजुक ज़िंदगी**

जैस्मिन उन क्लबों में काम करती है जो आधी रात के बाद जीते हैं। वह कला के लिए नहीं नाचती। वह ज़िंदा रहने के लिए नाचती है।

लंबी पालियाँ, अँधेरे गलियारे, ज़रूरत से ज़्यादा मुस्कुराने वाले मैनेजर, सेवा को हक़ समझ बैठने वाले ग्राहक।

उसने दस नियम सीखे हैं जो कहीं लिखे नहीं हैं: – मुस्कुराओ – भरोसा मत करो – अकेली मत रहो – जो पिलाएँ वह मत पियो – डर मत दिखाओ – आँखें खुली रखो – दोस्त मत बनाओ – किसी वादे पर यक़ीन मत करो – रुको मत – देर रात अकेली घर मत लौटो।

हर रात एक अदृश्य धागे पर संतुलन का खेल है। उसे कोई नहीं बचाता: न क्लब, न पुलिस, न शहर।

उसकी अनुपस्थिति नैतिक है: सब जानते हैं कि वह मौजूद है, पर कोई उसे एक कामगार के रूप में मानना नहीं चाहता।

मैं, नांदो, जब लड़कियों को भोर में क्लबों से निकलते देखता हूँ, तो जानता हूँ कि ताक़त चमक-दमक नहीं है। वह ज़िंदा रहना है। — नांदो डिलीवरी करने वाली महिला कार्ला, 30 – क्रीस → मैनेटन, बारिश, बर्फ़, गर्मी, हमेशा सड़क पर कार्ला अपनी साइकिल से काम करती है। पीठ पर थर्मल बैग, हैंडल पर फ़ोन, एक ऐप जो सब कुछ तय करता है: – रास्ता – पैसा – समय – जुर्माना – अगला ऑर्डर वह व्यवस्था का “स्मार्ट” हिस्सा है। वह हिस्सा जिसकी ओर कोई देखना नहीं चाहता। वह कारों, टैक्सियों, गड्डों और बेरहम ट्रैफ़िक लाइटों के बीच से फ़ुर्ती से निकलती है। वह बारिश में, बर्फ़ में, चेहरे को जमा देने वाली हवा में पैडल मारती है। यह सब बूँद-बूँद मिलने वाले कुछ डॉलरों के लिए। उस शाम वह थकी-हारी घर लौटती है। न सुरक्षा, न बचाव, न बीमा। उसकी अनुपस्थिति डिजिटल है: वह सिर्फ़ ऐप्स के भीतर मौजूद है। बाहर नहीं। — नांदो डीप क्रीस की अकेली माँ एरिका, 33 – फ़ार रॉकअवे, समुद्र, दूरी और गरीबी के बीच फ़ार रॉकअवे न्यूयॉर्क है, पर पूरी तरह नहीं। यह दूर है, कटा हुआ है और भुला दिया गया है। एक इलाक़ा जिसे शहर सिर्फ़ आँकड़ों के लिए इस्तेमाल करता है। एरिका वहाँ दो बच्चों के साथ रहती है। वह एक सुपरमार्केट में काम करती है। हर दिन वह जो कर सकती है, करती है:

– बच्चों को पालती है – उन्हें कपड़े पहनाती है – नाश्ता बनाती है – उन्हें स्कूल ले जाती है – काम पर भागती है – ग्राहकों, तौल, कैश काउंटर को सँभालती है – बेहद लंबी बस यात्राओं से घर लौटती है – खाना पकाती है – सफ़ाई करती है – सब कुछ व्यवस्थित करती है

वह एक ऐसी माँ है जिसकी तीन ज़िंदगियाँ हैं: अपनी, अपने बच्चों की और मोहल्ले की।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है: वह इतनी दूर रहती है कि दिखाई नहीं देती।

मैं, नांदो, नक्शे और दूरियाँ देखता हूँ और एक बात जानता हूँ: जो फ़ार रॉक अवे में रहते हैं, वे हर दिन एक अदृश्य विकलांगता के साथ जीते हैं।

— नांदो

ब्रुकलिन के अश्वेत समुदाय की महिला

### **लाटोया, 40 – ब्राउन्सविल, ज़िंदा रहने की दिनचर्या**

ब्राउन्सविल न्यूयॉर्क के सबसे ज़्यादा चोट खाए मोहल्लों में से एक है। पुरानी गरीबी, ख़राब सेवाएँ, उपेक्षित स्कूल।

लाटोया के दो काम हैं: सुबह एक स्कूल में, शाम को एक वृद्धाश्रम में।

उसका दिन कभी ख़त्म नहीं होता। उसका कोई समय-सारिणी नहीं है। उसके पास कोई गुंजाइश नहीं है। उसके पास कोई राहत नहीं है।

हर महीने तुम्हें तय करना पड़ता है कि पहले क्या चुकाना है: किराया? बिल? खाना? परिवहन? दवाईयाँ?

उसकी अनुपस्थिति नस्लीय है: एक ऐसे शहर में जो खुद को “प्रगतिशील” कहना पसंद करता है, गरीब मोहल्लों की अश्वेत महिलाएँ सबसे आख़िर में ग़ायब होती हैं और फिर से तभी दिखती हैं जब ऑनलाइन डालने के लिए कोई त्रासदी हो।

— नांदो टेक की महिला हन्ना, 29 – मैनहैटन, स्टार्टअप, बेचैनी, दबाव, दिखावा हन्ना एक टेक स्टार्टअप में काम करती है जो “विविधता”, “समावेश”, “भविष्य” और “नए नेतृत्व” की बात करता है। फिर, व्यवहार में: – ऊपर पुरुष – फ़ैसले लेने वाले पुरुष – प्रोजेक्ट चलाने वाले पुरुष – फ़ंड पाने वाले पुरुष। हन्ना सारा अदृश्य काम करती है: व्यवस्था करना, संपादन, प्रस्तुति, ग्राहकों से निपटना और आपात स्थितियों से निपटना। वह अच्छी है। इतनी अच्छी कि हर कोई उसका फ़ायदा उठाता है। वह एक साल से बेचैनी और बर्नआउट के लिए थेरेपी में है। उसकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक है: टेक आधुनिक होने का दावा करता है, पर भीतर से पुराना है। मैं, नांदो, समझ गया हूँ कि “नई दुनिया” तब तक नहीं

बदलती जब तक उसे चलाने वाले नहीं बदलते। — नांदो बिना कागज़ों की प्रवासी यारिट्ज़ा, 26 वर्ष – ब्रॉन्क्स, हर जगह काम करती है, छिपकर जीती है। यारिट्ज़ा राज्य के लिए मौजूद नहीं है। इसलिए राज्य भी उसके लिए मौजूद नहीं है। वह तीन असामान्य जगहों पर काम करती है: – एक अपार्टमेंट बिल्डिंग में सफ़ाई – एक डेली में खाना पकाना – ज़रूरत पड़ने पर बेबीसिटिंग।

उसे नक़द पैसे मिलते हैं। कोई सुरक्षा नहीं। कोई बचाव नहीं। कोई अधिकार नहीं।

वह पुलिस से डरती है, इमिग्रेशन से डरती है, मकान-मालिकों से डरती है, डरती है कि एक शिकायत उसे हमेशा के लिए गायब कर देगी।

उसकी अनुपस्थिति क़ानूनी है: वह दो दुनियाओं के बीच की दरार में जीती है। वह ज़रूरी है, पर अमान्य।

— नांदो

भागती हुई प्रवासी महिला

### ***माहा, 37, एस्टोरिया से, ज़बरदस्ती के विवाह से भागी हुई।***

माहा दो साल पहले मध्य पूर्व से आई। वह पीछे छोड़ आई एक हिंसक पति, एक ऐसा परिवार जो उसकी आज़ादी नहीं चाहता था, और एक ऐसी संस्कृति जो महिला को अपने फ़ैसले ख़ुद लेने नहीं देती।

न्यूयॉर्क में वह एस्टोरिया के एक साझा कमरे में रहती है। वह एक किराने की दुकान में काम करती है। वह शाम को फ़ोन पर वीडियो देखकर अंग्रेज़ी सीखती है।

वह अपने भीतर एक पुराना डर ढोती है: कि परिवार में कोई उसे ढूँढ़ लेगा। कि सब कुछ लौट आएगा। कि आज़ादी ख़त्म हो जाएगी। उसकी अनुपस्थिति भावनात्मक है: वह आधी-अधूरी मौजूद है, एक पैर नई ज़िंदगी में और एक अनंत भागने में।

न्यूयॉर्क ने उसे गायब होने का मौक़ा दिया। अब उसे मौजूद रहना सीखना है।

— नांदो

मीलों सड़कों, मेट्रो, शोर और दौड़ की महिला

एलेना, 50 वर्ष – मैनेजमेंट, निगल जाने वाले शहर में बिताई एक ज़िंदगी।

एलेना तीस साल से ज़्यादा समय से इस शहर में रहती है। उसने मोहल्लों, इमारतों, दुकानों और चेहरों को बदलते देखा है। उसने दोस्तों को जाते, साथियों को नौकरी खोते, परिवारों को टूटते देखा है।

वह रह गई।

वह एक डिपार्टमेंट स्टोर में सुपरवाइज़र के रूप में काम करती है। लंबी पालियाँ, भारी ज़िम्मेदारी, लगातार दबाव। वह टीमें चलाती है, ग्राहकों को सँभालती है, और उन दिनों को बचाती है जो हाथ से निकल जाने चाहिए थे।

एलेना असली न्यूयॉर्क है: वह जो फ़िल्मों में नहीं दिखता। वह जो व्यवस्था को चलाता है। वह जो शिकायत नहीं करता पर हर चोट महसूस करता है।

उसकी अनुपस्थिति अस्तित्व की है: उसने शहर को सब कुछ दिया, और शहर ने उसे बदले में सिर्फ़ टिके रहना दिया।

मैं, नांदो, जब ऐसी महिलाओं से मिलता हूँ जो बीस साल से यहाँ रहती हैं, तो कुछ ऐसा समझता हूँ जो कोई पर्यटक कभी नहीं समझेगा: न्यूयॉर्क में रहना एक धीमा युद्ध है। और जो टिके रहते हैं, वे हर दिन बिना जश्न के जीतते हैं।

— नांदो

## **उपसंहार**

न्यूयॉर्क एक ऐसा शहर है जो देखे जाने की माँग करता है, पर खुद कभी सच में नहीं देखता। यह एक ऐसी जगह है जो तुम्हारे भीतर एक बिन माँगे चुनाव की तरह उतरती है: या तो तुम उसे स्वीकार करो, या वह तुम्हें कुचल देगी।

इस आदर्श अराजकता के भीतर महिलाएँ वह अदृश्य धुरी हैं जो सब कुछ जोड़े रखती हैं। वे ट्रेनों में हैं, रसोइयों में, अस्पतालों में, स्कूलों में, गगनचुंबी इमारतों में, गोदामों में, उन मोहल्लों में जहाँ सत्ता कभी क़दम नहीं रखती। वे हर जगह हैं, पर उन्हें सिर्फ़ ज़रूरत पड़ने पर याद किया जाता है।

शहर ज़िंदगी से भी तेज़ दौड़ता है, और उस दौड़ में उन्हीं को खपा देता है जो उसे सच में थामे रखती हैं। न्यूयॉर्क सब कुछ का वादा करता है: सफलता, अवसर, मुक्ति। फिर वह एक ऐसी क्रीमट माँगता है जो वह बताता नहीं।

सच सीधा है: दुनिया का सबसे मशहूर शहर उन महिलाओं की पीठ पर फलता-फूलता है जो कभी कवर पर नहीं आतीं।

यह अध्याय उन्हें फिर से सतह पर लाता है। एक-एक करके। कहानी-दर-कहानी। बिना छुने। बिना रूमानी बनाए। सीधी पीठ के साथ, जैसा हर उस ज़िंदगी का हक़ है जो लाखों दूसरों का बोझ उठाते हुए भी अनदेखी रहती है।

## **चिंतन**

इस खंड का हर राज्य एक तरह की अनुपस्थिति दिखाता है। न्यूयॉर्क में वे सब समाई हैं। यहाँ स्त्री की अनुपस्थिति पूरी और कई गुना है: – समय की अनुपस्थिति– सुरक्षा की अनुपस्थिति– मानसिक जगह की अनुपस्थिति– पहचान मिलने की अनुपस्थिति– सुने जाने की अनुपस्थिति– राहत की अनुपस्थिति– स्वतंत्र पहचान की अनुपस्थिति– जो दिया उसके बदले कुछ लौटने की अनुपस्थिति।

जो शहर आज़ादी का विचार बेचता है, वही शहर हज़ारों महिलाओं को ऐसी व्यवस्थाओं के भीतर ज़िंदा रहने को मजबूर करता है जो उनके लिए बनी ही नहीं थीं। वे अनिवार्य हैं, पर फेंकी जा सकने वाली। वे मौजूद हैं, पर अदृश्य। वे इंजन हैं, पर कहानी नहीं।

न्यूयॉर्क में हर महिला एक अलग लड़ाई लड़ती है, पर सबकी ज़मीन एक है: एक ऐसा शहर जो रुकता नहीं, उनके संघर्ष के सामने भी नहीं।

और ठीक इसीलिए ये पन्ने ज़रूरी हैं: न्यूयॉर्क सिर्फ़ स्काईलाइन, कला, संस्कृति, सफलता नहीं है। वह अनुपस्थिति भी है। स्त्री की अनुपस्थिति। सबसे ज़्यादा टाली गई, सबसे सच्ची, सबसे स्थायी।

## **निजी टिप्पणी**

न्यूयॉर्क मेरा घर है। और ठीक इसलिए कि वह मेरा घर है, मैं उसके झूठ माफ़ नहीं करता।

मुझे पर्यटकों, अखबारों, टीवी सीरीज़ या दूसरों के सपनों में दिखने वाले शहर का वर्णन करने में कोई दिलचस्पी नहीं है। मुझे उस शहर में दिलचस्पी है जो साँस लेता है, जिससे खून बहता है, जो असली लोगों के कंधों पर हर दिन टूटता है और खुद को फिर से बनाता है।

मैंने इतना देखा है कि एक बात पक्के तौर पर समझ सकूँ: यहाँ महिलाएँ दोगुना थामती हैं और आधा पाती हैं। इसलिए नहीं कि वे कमज़ोर हैं, बल्कि इसलिए कि शहर को उनकी ताक़त की आदत पड़ गई है। और जब दुनिया को तुम्हारी ताक़त की आदत पड़ जाती है, तो वह तुम्हें बचाना बंद कर देती है। मैंने, नांदो, ये कहानियाँ इसलिए लिखी हैं क्योंकि मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि यह सब ख़ामोशी में गुज़र जाए। मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि जो इस पूरी मशीन को चलाती हैं, उन्हें कहानी से हाशिये पर कर दिया जाए। मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि शहर का शोर उन ज़िंदगियों के शोर को दबा दे जो उसे डूबने नहीं देती।

न्यूयॉर्क सुंदर है, पर निर्दोष नहीं।

ये पन्ने इसे कहने का मेरा तरीका हैं, बिना कुछ मीठा किए, सच का एक कण भी कम किए बिना, किसी की इजाज़त माँगे बिना।

— नांदो

*फर्दिनांदो फ्रेगा*